सत्य शब्द संग्रह

प्रकाशक

श्री भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा, रेवाड़ी ॥

सम्वत् १९८२

मूल्य ।)

नम्र निवेदन।

नम्र निवेदन।

मेरे प्यारे बन्धुवर्ग! यदि आप स्वयं सुख और शान्ति चाहते हैं और संसार को सुखमय व शान्त बनाना चाहते हैं, तो उस कल्याणकारिणी भक्ति का आचरण कर संसार में भक्ति फैलाने का प्रयत्न करो। जिस भक्ति में मग्न होकर ऋषि मुनि नृत्य करते थे, जिस भक्ति के बल से भगवान राम और कृष्ण ने संसार को स्वर्ग बनादिया था उसका रस पान करने

और कराने के लिये उन ऋषि, मुनि महात्माओं के बनाए गीत गाओ और उन गीतों को फैलाओ। मोक्ष में भक्ति से बढ़कर कोई साधन नहीं है और उपासना में गाने से बढ़कर कोई तरीका नहीं है। देश के नर नारी और बालक यदि प्रेम में मग्न होकर भगवान के गीत गावेंगे तो भगवान अवश्यमेव मनवांछित फल प्रदान करेंगे।

भक्तों का दास—दलीप बनस्थी

श्री भगवद्भक्ति आश्रम

रामपुरा, पो० रेवाड़ी (दिल्ली)

ओं तत्सत् परब्रह्म परमात्मने नमो नमः

रामपुरा, पो० रेवाड़ी (दिल्ली)

ओं तत्सत् परब्रह्म परमात्मने नमो नमः
श्री सच्चिदानन्दानन्त स्वरूपाय नमो नमः

अथ मङ्गलम्

दो०——नमो नमो गोविन्द गुरु, विनवौं अभिजन सोय ।
पहिले भये प्रणाम तिन, नमो जो आगे होय ॥
नमो नमो श्रीराम जू सत् चित् आनन्द रूप ।
जेहि जानत जग स्वप्नवत् नाशत भ्रम तम कूप ॥
ओं निरंजनं दुःख भंजनं ररंकार ओंकार ।
सत्य पुरुष सोऽहं तुही अलखं सर्वा धार ॥

शब्द १

ओं निरंजन ररंकार प्रभु, सोऽहं सत्य नाम कर्तार ।
अच्युत गुरु गोविन्द दातार, परमानन्द रूप निरधार ॥ टेक ॥
एक अखण्ड ज्ञान भण्डार, तुमरी ज्योति का उजियार ।
मैं मैं मैं पन सर्वाधार, नेति नेति कर वेद उचार ॥ १ ॥
एक आत्मा अपरम्पार, शंकर ब्रह्म सर्व का सार ।
ओत प्रोत सब में निरंकार, जीवन प्राण आप ओंकार ॥ २ ॥
हरि नारायण अग्नि तार, देव देव मैं कर हूं पुकार ।

कृष्णानन्ता चलहं गौड़ हुं, फट अल्ला सर्व पसार ॥ ३ ॥
विनवौं तुम को बारम्बार, प्रीतम प्यार करो उद्धार ।

ओत प्रोत सब में निरंकार, जीवन प्राण आप आकार ॥ २ ॥
हरि नारायण अग्नि तार, देव देव मैं कर हूं पुकार ।

कृष्णानन्ता चलहं गौड़ हुं, फट अल्ला सर्व पसार ॥ ३ ॥
विनवौं तुम को बारम्बार, प्रीतम प्यार करो उद्धार ।
तद्वन गणपति नैन मंझार होवे अनन्त तुम्हें नमस्कार ॥ ४ ॥

शब्द २

हरि नारायण हरि नारायण, नारायण हरि ओम् ॥ टेक ।
भव दुःख हारण सब सुख कारण पतित उधारण प्रभु ओम् ॥ १ ॥
शुद्ध सच्चिदानन्द स्वरूपा अगम अरूपा शिव ओम् ॥ २ ॥
निगम निरूपा सुर नर भूपा ज्योति स्वरूपा प्रभु ओम् ॥ ३ ॥

अनन्त अपारा पार न वारा निराधारा हरि ओम् ॥ ४ ॥
ब्रह्म विकाश स्वयं प्रकाश जगन्निवास स्वामी ओम् ॥ ५ ॥
राम गोविन्द परमानन्द कृष्ण मुकुन्द गुरु ओम् ॥ ६ ॥

शब्द ३

भजो राधे कृष्णा राधे कृष्णा राधे गोविन्द ॥ टेक ॥
केशो जी कल्याण गिरि धरण छबीले लाल ।
नन्द नन्दन श्री वृन्दावन चन्द ॥ १ ॥
देवकी को छैय्या बलभद्र जी को भय्या लाल ।

जाके मुख देखे ते मिटत दुःख द्वन्द्व ॥ २ ॥
ब्रजपति ब्रजराय सन्तन सदा सहाय ।

नन्द नन्दन श्री वृन्दावन चन्द ॥ १ ॥
देवकी को छैय्या बलभद्र जी को भय्या लाल ।

जाके मुख देखे ते मिटत दुःख द्वन्द्व ॥ २ ॥
ब्रजपति ब्रजराय सन्तन सदा सहाय ।
मुरली धरन नैना देखे ते आनन्द ॥ ३ ॥
जादों पति जादों राज सूरन के सारे काज ।
याहि धुनि गावें स्वामी परमानन्द ॥ ४ ॥

शब्द ४

श्री मन्नारायण नारायण नारायण ॥ टेक ॥
चार वेद अरु भगवत गीता तुलसीदासजी की रामायण ॥ १ ॥

जाको नाम लेत अघ नासत काम क्रोध भये जारायण ॥२॥
अजामेल गज गणिका तारे, नाम लेत भये पारायण ॥ ३ ॥
क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल शंख चक्र गदा धारायण ॥४॥
शिवरी के फल रुचि २ पाये, भक्त सुदामा तारायण ॥ ५ ॥

शब्द ५

हमारे प्रभु एक तुमही ओंकार
मात पिता गुरु बन्धु सहोदर, धन विद्या परिवार ॥टेक॥
मन बल बुद्धि प्राण तुमही हो, नयनन में उजियार ।

हरि होकर हरे रंग में दीसो, पत्र पुष्प फल डार ॥ १ ॥
धरणी आकाश शशी और तारे, बिजली में चमकार ।

मात पिता गुरु बन्धु सहोदर, धन विद्या परिवार ॥टेक॥
मन बल बुद्धि प्राण तुमही हो, नयनन में उजियार ।

हरि होकर हरे रंग में दीसो, पत्र पुष्प फल डार ॥ १ ॥
धरणी आकाश शशी और तारे, बिजली में चमकार ।
ऊपर नीचे पर्वत सागर, सब तुम अपरम्पार ॥ २ ॥
तुम ही सूरज में हो गरजो, बर्षो अमृत धार ।
एक धुनि हो तुम से सब की, तुमरा धार न पार ॥ ३ ॥
सुन्दर शक्ति विकाश शुद्धता, हमको दे दातार ।
काम क्रोध मद लोभ निवारो, परमानन्द दो प्यार ॥ ४ ॥

शब्द ६

दीनानाथ दयानिध स्वामी, कौन भांति मैं तुम्हें रिझाऊं ॥ टेक ॥
श्री गंगा चरणों से निकसी, शूचो नीर कहां से प्रभु लाऊं ।
काम धेनु कल्प वृक्ष तुम्हारे, कौन सो पदारथ भोग लगाऊं ॥ १ ॥
चार वेद तुम मुख से भासे, और कहा प्रभु पाठ सुनाऊं ।
अनहद बाजे बजत तुम्हारे, ताल मृदंग क्या शंख बजाऊं ॥ २ ॥
कोटि भानु थारे नख की शोभा, दीपक ले प्रभु कहां दिखाऊं ।
लक्ष्मी थारी चरणन की चेरी, कौन द्रव्य प्रभु भेंट चढ़ाऊं ॥ ३ ॥
तुम तिरलोकी के करता हरता, तुम्हें छोड़ प्रभु कौन पै जाऊं ।
सूर श्याम प्रभु विपत विडारन, मनवांछित फल तुम ही से पाऊं ॥ ४ ॥

शब्द ७

तुम तिरलोकी के करता हरता, तुम्हें छोड़ प्रभु कौन पै जाऊं।

सूर श्याम प्रभु विपत विडारन, मनवांछित फल तुम ही से पाऊं ॥ ४॥

शब्द ७

आप ही धारम धारी म्हारे सतगुरु आप ही खेल खिलारी हो। टेक।
तम्बू से असमान बनाये, जमी ग़लीचा डारी है।
चान्द सूरज दो मिसल बनाये, तारागण फुलवारी है ॥ १ ॥
सुरत निरत की चौसर मांडी, तो पासा जग सारी है।
जिसकी नरद जीत घर आवे, सो नर सुघड़ खिलारी है ॥ २॥
सत् को चीन्ह विहंगम चीन्हा जिसकी शून्य अटारी है।

जापर सत्गुरु राज़ी हो गये, उसका जगत् भिखारी है ॥ ३ ॥
अमर लोक को किया पयाना, ज्ञान घोड़े असवारी है ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, अब के जीत हमारी है ॥ ४ ॥

शब्द ८

मरहम हो सोई जाने भाई साधो, ऐसा देश हमारा है ॥ टेक ॥
बिन बादल बिजली वहां चमके, बिन सूरज उजियारा है ।
बिना नयन वहां मोती पुरोवें, बिन स्वर शब्द उचारा है ॥ १ ॥
भंवर गुफा में अनहद बाजे, मुरली बीन सितारा है ।

निरमल बून्द मिली दरिया में, नहीं मीठा नहीं खारा है ॥ २ ॥
जात वर्ण वहां सूझत नाहीं, ना वहां वेद विचारा है ।

बिना नयन वहां मोती पुरोवें, बिन स्वर शब्द उचारा है ॥ १ ॥
भंवर गुफा में अनहद बाजे, मुरली बीन सितारा है ।

निरमल बून्द मिली दरिया में, नहीं मीठा नहीं खारा है ॥ २ ॥
जात वर्ण वहां सूझत नाहीं, ना वहां वेद विचारा है ।
वहां जाय ब्रह्म बन बैठे, कहन सुनन से न्यारा है ॥ ३ ॥
इस पद को जो समझत बूझत, अलख लखे सोई प्यारा है ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, पहुंचेगा पहुंचन हारा है ॥ ४ ॥

शब्द ६

साधो हम हैं बासी वा देश के, कोरी वा देश के ॥ टेक ॥
सुरत निरत का जहां ताना पूरा, कपड़ा बुनता अलेख के ॥ १ ॥

हमरे देश में कोई चान्द न सूरज, सदा रहत दिन एक से ॥ २॥
हमरे देश का मरम कोई जाने, सदा रहै सुख एक से ॥ ३॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, साधु साहिब एक से ॥ ४॥

शब्द १०

मन परदेशी हो यह नहीं अपना देश ॥ टेक ॥
सतका कहना सत में रहना, आनन्द रूप किसी का भय ना ।
जो कोई कहै सभी की सहना, येही रटन हमेश ॥ १ ॥
सत्गुरु का बचन सत्य कर मानो, जगत जाल झूठा कर जानो ।

तत्वमसि का रूप पिछानो, कट जांय करम कलेश ॥ २ ॥
जो दीखे सो रूप हमारा, कोई नहीं है हम से न्यारा ।
मित्र और शत्रु कोई न हमारा, मिट गये राग और द्वेष ॥ ३ ॥

जो कोई कहै सभी की सहना, येही रटन हमेश ॥ १ ॥
सत्गुरु का बचन सत्य कर मानो, जगत जाल झूठा कर जानो।

तत्वमसि का रूप पिछानो, कट जांय करम कलेश ॥ २ ॥
जो दीखे सो रूप हमारा, कोई नहीं है हम से न्यारा।
मित्र और शत्रु कोई न हमारा, मिट गये राग और द्वेष ॥ ३ ॥
शाह गुरु शुकदेव विराजे, चरण दास चरणों में साजे।
गुरु के बचन कभी नहीं त्यागे, यही सत्य उपदेश ॥ ४ ॥

शब्द ११

हंसा चाल बसो वा देश जहां का बसा फेरना मरे ॥ टेक ॥
जहां अगम निगम दोऊ धाम, बास तेरा परे से परे।

जहां वेदों की गम नांय, ज्ञान और ध्यान भी डरे ॥ १ ॥
जहां बिन धरणी की बाट, चरणों ते बिना गमन करे ।
जहां बिन श्रवण सुन ले, नयनों के बिना दरश करे ॥ २ ॥
जहां बिन देही एक देव, प्राणों के बिना श्वास भरे ।
जहां जगमग जगमग होय, उजारो दिन रात रहे ॥ ३ ॥
जहां प्रेम नगरिया के घाट, अधर दरियाय बगे ।
जहां सन्त करैं असनान, दूजा तो कोई न्हाय न सके ॥ ४ ॥
जाके न्हाये से सुख होय, तपत तेरे तन की मिटे ।

तेरे जन्म मरण मिट जांय, चौरासी का फन्द कटे ॥ ५ ॥
यों कहते नाथ गुलाब, अमरापुर थारा वास करे ।

जहां सन्त करैं असनान, दूजा तो कोई न्हाय न सके ॥ ४ ॥
जाके न्हाये से सुख होय, तपत तेरे तन की मिटे ।

तेरे जन्म मरण मिट जांय, चौरासी का फन्द कटे ॥ ५ ॥
यों कहते नाथ गुलाब, अमराउर थारा बास करै ।
गुण गावे भानी नाथ, आनन्द में सदा लगा ही रहे ॥ ६ ॥

शब्द १२

मेरा मन बानियां रे अपनी बान कभी ना छोड़े ॥ टेक ॥
हेर फेर के दोनों पलड़े, अन्दर काणी डांडी ।
मन में झूट कपट हिरदे में, हाट चौसले मांडी ॥ १ ॥
पूरे बाट परे सरकावे, कमती बाट टटोले ।

पासंग माहीं डांडी मारे, वेगा वेगा बोले ॥ २ ॥
घर तेरे में कुबुध किराड़ी, छिन छिन में चित चोरे ।
कुनबा तेरा बड़ा हरामी, अमृत में बिष घोले ॥ ३ ॥
जल में तूही थल में तूही, घट घट में हरि बोले ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, भरम बन्धा जग डोले ॥ ४ ॥

शब्द १३

मेरे सारे दुःख बिसर गये सत्गुरु की मैंने शरण लई ॥ टेक॥
और सखी सब दूबली, तू बिरहन क्यों लाल ।

अविनाशी की सेज पर, मौजां हुई निहाल ॥ १ ॥
अविनाशी की सेज का, कह कितना बिस्तार ।
कहन सुनन की गम नहीं, पौढत बे परवाह ॥ २ ॥

मेरे सारे दुःख विसर गये सतगुरु की मैंने शरण लई ॥ टेक॥
और सखी सब दुखी, तू विरहन क्यों लाल ।

अविनाशी की सेज पर, माँजां हुई निहाल ॥ १ ॥
अविनाशी की सेज का, कह कितना विस्तार ।
कहन सुनन की गम नहीं, पौढत बे परवाह ॥ २ ॥
सतवन्ती पीहर बसे, अन्तर पिव का ध्यान ।
कहती तो लाजां रहे, ऐसा है आतम ज्ञान ॥ ३ ॥
हँसी नहीं मुसका गई, रहे टक टके नैन ।
कहैं कबीरा लख गये, सखी सखी के सैन ॥ ४ ॥

शब्द १४

धीरा मन समझियो रे लोभी, ये तिरने का घाट ॥ टेक ॥
कथनी के शूरा घने, सब बांधे हथियार ।
उत कोई बिरला डटै, जित बाजे तलवार ॥ १ ॥
शूरा रण में जाय के, किसकी देखे बाट ।
ज्यों ज्यों पग आगे धरे, आप कटे चाहे काट ॥ २ ॥
हीरा बीच बज़ार के, सब निरखें साहूकार ।
जब लों जोहरी नांह मिले, सब की अक़्ल खुवार ॥ ३

सती जो सत पर चढ़ गई, कर प्रीतम से प्यार ।
तन मन अपना जारि के, मांह मिला दई छार ॥ ४ ॥
तन मन सौंपो गुरु अपने को, सत्य शब्द पहिचान ।

ज्यों ज्यों पग आगे धरे, आप कट चाहे काट ।। २ ।।
हीरा बीच बज़ार के, सब निरखैं साहूकार ।
जब लौं जौहरी नांह मिले, सब की अक़ल खुवार ।। ३

सती जो सत पर चढ़ गई, कर प्रीतम से प्यार ।
तन मन अपना जारि के, मांह मिला दई छार ।। ४ ।।
तन मन सौंपो गुरु अपने को, सत्य शब्द पहिचान ।
मुश्किल से आसान हो गई, जब से सौंप दई जान ।। ५ ।।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, लीजो आप संभाल ।
चेता जाय तो चेत बावरे, नातर खायगो कफनी काल ।।

शब्द १५

वा घर कभी न जाना जी जाके हिरदे ही में पाप ।। टेक ।।

मात पिता का कहा न माने, गुरु के नहीं बचन में ।
पर तिरया से नेह लगावे, सुरति नहीं भजन में ॥१॥
कंचन मैला कभी न होवे, दाग़ रति न लागे ।
गठरी उसकी कौन छीन ले, पहरे अपने जागे ॥२॥
बाहर उजला अन्दर काला, बुगले का सा भेष ।
बाहर मैल द्वेष हिरदे में, भक्ति लगे ना लेष ॥३॥
गुरुमुख सो तो पार उतर गये, भव सागर जल तरिया ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, हरिका सुमरण करिया ॥४॥

शब्द १६

घायल ना जीवे, जाके लगे शब्द के सेल ॥टेक॥
लागी लागी सभी कहैं रे, लागी नाहीं एक ।
लागी तब ही जानिये रे, घाव न आवे मेल ॥१॥

गुरुमुख सो तो पार उतर गये, भव सागर जल तरिया ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, हरिका सुमरण करिया ॥ ४ ॥

शब्द १६

घायल ना जीवे, जाके लगे शब्द के सेल ॥ टेक ॥
लागी लागी सभी कहैं रे, लागी नाहीं एक ।
लागी जब ही जानिये रे, घाव न आवे मेल ॥ १ ॥
लागी उनको जानिये रे, राज तजै अलबेल ।
अन्दर दीवा चस रहा रे, घला प्रेम का तेल ॥ २ ॥
पढ़ना लिखना है नहीं रे, सत् संगत का खेल ।
चार वेद घट में बसै रे, साचे गुरु से मेल ॥ ३ ॥

सत् संग सार अनेक हैं रे, काटें यम की बेल ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, झूठे जगत के खेल ॥ ४ ॥

शब्द १७

भजन बिन बावरे तैंने हीरा सा जन्म गंवाया ॥ टेक ॥
कभी न आया सन्त शरण में, ना कभी हरि गुण गाया ।
बह बह मरा बैल की नाईं सोय रहा उठ खाया ॥ १ ॥
ये संसार हाट बनिये की सब जग सौदे आया ।
चातर माल चौगुना कीना मूरख मूल ठगाया ॥ २ ॥

बे ससार फूल संभल का सूआ देख लुभाया ।
मारी चौंच रुई निकस्याई मूएडी धुन पछताया ॥ ३ ॥

ये ससार फूल संभल का सूआ देख लुभाया ।
मारी चौंच रुई निकस्याई मूएडी धुन पछताया ॥ ३ ॥
ये संसार माया का लोभी ममता महल चिनाया ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो हाथ कछू ना आया ॥ ४ ॥

शब्द १८

मन्दिर में कांइयों ढूंढ़ती फिरै कुन्ज गली में भगवान् ॥टेक॥
मूरत तो मन्दिर में मेली वह ना मुखते बोले ।
करनी पार उतरनी बन्दे वृथा जन्म कांइयों खोले ॥ १ ॥

गऊ मुखते गंगा निकली पांचों कपड़े धोले ।
बिन साबुन तेरा मैल कटै है हर भज हौला होले ॥ २ ॥
तन कर कूण्डी मन कर साबुन याही में शील समोले ।
सुरत ज्ञान करै ना मोगरा दिल की दुरमति धोले ॥ ३ ॥
शील सत्य की नवका चढ़के हर के दर्शन जोले ।
कहै कबीर सुनों भाई साधो पर्वत राई के ओल्हे ॥ ४ ॥

शब्द १६

बागों ना जारे तेरी काया में गुलज़ार ॥ टेक ॥

करनी क्यारी बोय के रे रहनी कर रखवार ।
दया पौद सूखे नहीं शील क्षमा जल डार ॥ १ ॥
मन माली पर बोध के रे संयम की कर बार ।

शब्द १६

बागों ना जारे तेरी काया में गुलज़ार ॥ टेक ॥

करनी क्यारी बोय के रे रहनी कर रखवार ।
दया पौद सूखे नहीं शील क्षमा जल डार ॥ १ ॥
मन माली पर बोध के रे संयम की कर बार ।
दुर्मति काग उड़ाय के रे देखे क्यों न बहार ॥ २ ॥
मन गुलाब चित केवड़ा रे फूल रही फुलवार ।
मुक्ति कली खिल रही रे गूंथ पहरले हार ॥ ३ ॥
लोभ लहर गहरी नदी रे लख चौरासी धार ।
निगुरे निगुरे बह गये रे सन्त उतर गये पार ॥ ४ ॥

अष्ट कमल दल ऊपर रे महिमा अपरम्पार ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो आवा गमन निवार ॥ ५ ॥

शब्द २०

साधो मूला बेटा जायो, गुरु प्रताप साधु की संगत खोज
कुटुम्ब सब खायो ॥ टेक ॥
ममता माई जन्मत खाई पाप पुण्य दोऊ भाई ।
काम क्रोध दोऊ काका खाये खाई तृष्णा दाई ॥ १ ॥
राग द्वेष पारोसी खाये शुभ अशुभ दोऊ मामा ।

मोह नगर का राजा खाया तब पहुंचा उस धामा ॥ २ ॥
दुविधा दादी अहं बड़ दादा मुख देखत ही मूआ ।

ममता माई जन्मत खाई पाप पुण्य दोऊ भाई ।
काम क्रोध दोऊ काका खाये खाई तृष्णा दाई ॥ १ ॥
राग द्वेष पारोसी खाये शुभ अशुभ दोऊ मामा ।

मोह नगर का राजा खाया तब पहुंचा उस धामा ॥ २ ॥
दुविधा दादी अहं बड़ दादा मुख देखत ही मूआ ।
मंगल चार बधाई बाजी जब यह बालक हुवा ॥ ३ ॥
ज्ञान नाम धरयो बालक को शोभा बरणी न जाई ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो घट २ रहा समाई ॥ ४ ॥

शब्द २१

शब्द ही शब्द भयो उजियारो सतगुरु भेद बतायो, अपन को
आपा ही में पायो ॥ टेक

जैसे कामिन सुत ले सोई सुपने माहीं भुलायो ।
जागि परी पलिका पर देखो ना कहीं गयो न आयो ॥ १ ॥
जैसे कमरी कंठ को हीरा आभूषण विसरायो ।
संगकी सहेली मिल भेद बताओ जीव को भरम नसायो ॥ २ ॥
जैसे मृग नाभि कस्तूरी डोलत बन बन धायो ।
नाशा श्वास भई जब आगे पलट निरन्तर आयो ॥ ३ ॥
कहा कहूं वा सुख की महिमा गूंगे ने गुड़ खायो ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो ज्यों का त्यों दरशायो ॥४ ॥

शब्द २२

लाडो मेंडुकी री तू तो पानी में की रानी ॥ टेक ॥

नाशा श्वास भई जब आगे पलट निरन्तर
कहा कहूं या सुख की महिमा गूंगे ने गुड़ खायो ।
कहें कबीर सुनो भाई साधो ज्यों का त्यों दरशायो ॥४॥

शब्द २२

लाडो मेंढुकी री तू तो पानी में की रानी ॥ टेक ॥
कव्वा तेरा भैया भतीजा चील लगे दौरानी ।
बगला तेरा छोटा देवर वाय देखि मुसकानी ॥ १ ॥
अन्धे ने मणिके को बींधा बिन अंगुली सुई चलानी ।
बिन ग्रीवा के माला पहरी बिन जिह्वा के वाणी ॥ २ ॥
चार चिरैयां मंगल गावें टैंटा ताल बजावे ।
सूतन पहर गधैया नाचे ऊंट बिसन पद गावे ॥ ३ ॥

कहै कबीर सुनो भाई साधो यह पद है निर्वाणी ।
जो इस पद की निंन्दा करे है वाको नरक निशानी ॥४॥

शब्द २३

तन मन धन बाजी लाग रही ॥ टेक ॥

चौपड़ मांड़ी पीव से रे तन मन धन बाजी लाय ।
हारी तो पीय की भई रे जीतूं तो पिया मेरा रे ॥ १ ॥
चार गली घर एक है रे वर्ण २ के लोग ।
मनसा बाचा कर्मणा रे प्रीति निभैयो ओड़ ॥ २ ॥

लख चौरासी भरम के हे पोह पर अटकी आय ।
जो अबके पोह ना पड़े हे बहुरि चौरासी जाय ॥ ३ ॥
... जीत भई को हार ।

लख चौरासी भरम के है पोह पर अटकी आय।
जो अबके पोह ना पड़े है बहुरि चौरासी जाय ॥ ३ ॥
कहैं कबीर धर्मदास को है जीत भई को हार।
अबके जो बाजी जीत जायरे सोही सुहागन नार ॥ ४ ॥

शब्द २४

मेरी सुरत सुहागन जाग री ॥ टेक ॥
क्या तू सोवे मोह नींद में उठ के भजन विच लाग री ॥ १ ॥
अनहद शब्द सुनो चित देके उठत मधुर धुन राग री ॥ २ ॥

चरण शीश धर विनती करियो पावे अचल सुहाग री ॥ ३ ॥
कहत कबीर सुनो म्हारी सुरतां जगत पीठ दे भाग री ॥ ४ ॥

शब्द २५

शब्द झड़ लाग्यो री बरसण लाग्या रंग ॥ टेक ॥
जन्म मरण की चिंता भागी समरथ नाम भजन लौ लागी ।
म्हारे सतगुरु दीनी सैन सत्य घर पाय गयोरी ॥ १ ॥
चढ़ी सुरत पश्चिम दरवाज़ा त्रिकुटी महल पुरुष एक राजा ।
अनहद की झनकार बजे जहां बाजारी ॥ २ ॥

अपने पिया संग जाकर सोई संशय शोक रहा नहीं कोई ।
कट गये करम कलेश भरम भय भागा री ॥ ३ ॥
शब्द विहंगम चाल हमारी कहैं कबीर सतगुरु दई तारी ।

म्हारे सत्गुरु दीनी सैन सत्य घर पाय गयारी ॥ १ ॥
चढ़ी सुरत पश्चिम दरवाज़ा त्रिकुटी महल पुरुष एक राजा ।
अनहद की झनकार बजे जहां बाजारी ॥ २ ॥

अपने पिया संग जाकर सोई संशय शोक रहा नहीं कोई ।
कट गये करम कलेश भरम भय भागा री ॥ ३ ॥
शब्द विहंगम चाल हमारी कहैं कबीर सत्गुरु दई तारी ।
रिम झिम रिम झिम होय काल वश आय गयारी ॥४॥

शब्द २६

भजन में होत आनन्द आनन्द कट जाय यम के फंद मिट जांय
सब दुःख द्वन्द ॥ टेक ॥
बरसें शब्द अमी के बादल भीजें महरम सन्त ॥ १ ॥

कर अस्नान मग्न हो बैठे चढ़ा शब्द का रंग ॥ २ ॥
अगर बास जहां तत् की नदियां बहत धारा गंग ॥ ३ ॥
तेरा साहिब है तेरे माहीं पारस परसे अंग ॥ ४ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो जपले ओंऽसोऽहं ॥ ५ ॥

शब्द २७

मोय नीको लागै बाजे अनहद तूर ॥ टेक ॥
सोऽहं सोऽहं ध्वनि होत है चहुं दिशि रही भरपूर ॥ १॥
रैन दिवस घन घोर उठत है क्या नीड़े क्या दूर ॥ २ ॥

कहत कबीर सुनो भाई साधो बर्षे नूर ही नूर ॥ ३ ॥

शब्द २८

॥ टेक ॥

मोय नीको लागै बाजे अनहद तूर ।। टेक ।।
सोऽहं सोऽहं ध्वनि होत है चहुं दिशि रही भरपूर ।। १।।

कहत कबीर सुनो भाई साधो बर्षे नूर ही नूर ।। ३ ।।

शब्द २८

मैं कैसे आऊंगी सांवरिया थारी विकट नगरिया ।। टेक ।।
नाम निशानी थारा पन्थ दुहेला चढ़त देख मेरा तन मन जरिया
जब लग नेजू थारी पहुंचत नाहीं तब लग आवे खाली गगरिया
बेगमपुर सोई जन जांयगे रूम रूम जिनके प्रेम कीपुरिया ।। ३
कहैं कबीर सोई जन पहुंचे ब्रह्म अग्नि पर जिनका तन मन जरिया

शब्द २९

लगन बिन जागै ना निर्मोही ॥ टेक ॥

बिना लगन की प्रीति बावरे ओस नीर ज्यों धोई ॥ १ ॥
हमतो रहते राम भरोसे रज़ा करै सोई होई ॥ २ ॥
बिन कृपा सतगुरु नहीं पावे लाख जतन करो कोई ॥ ३ ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो गुरु बिन मुक्ति न होई ॥ ४ ॥

शब्द ३०

माया हो रंग बादली जामें चन्दा हो दरशे नांह ॥ टेक ॥

काया में माया बसै ज्यों पत्थर में आग ।
जो तेरी सुरता हरि मिलन की चकमक होके लाग ॥ १ ॥

कहैं कबीर सुनो भाई साधो गुरु बिन मुक्ति न होइ ॥

शब्द ३०

माया हो रंग बादली जामें चन्दा हो दरशे नांह ॥ टेक ॥

काया में माया वसै ज्यों पत्थर में आग ।
जो तेरी सुरता हरि मिलन की चकमक होके लाग ॥ १ ॥
चोर चुराई तूंबरी जल में डूबे नांह
वह डूब वह ऊभरे करनी छानी नांह ॥ २ ॥
काम क्रोध के बने बदरवा गर्ज रहा हंकार ।
आशा तृष्णा खिवें बीजली भीज रहा संसार ॥ ३ ॥
ज्ञान पवन जब से चली सब बादल दिये उड़ाय ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो चन्दा हो दर्शा आय ॥४॥

शब्द ३१

अजपा जाप जपो भाई साधो श्वासों की करलो माला मोरे
रामा ॥ टेक ॥

हाथ सुमरनी बग़ल कतरनी यह क्या रच दियो चाला ।
लोगों के भावें भक्ति कमावे साहिब के मुख काला ॥ १ ॥
जब लग दरशे ना सच्चा सांईं होवे ना घट उजियाला ।
बिन सत्गुरु ताली नहीं लागे खुले न भ्रम का ताला ॥ २ ॥
मन का मनियां फेरि प्राणी क्यों हो रहा मतवाला ।

गठरी खोल लाल नहीं परखा इस विधि आया दिवाला ॥ ३ ॥
साध संत की सेवा करले सन्तों का देश निराला ।
साधो पीलो निर्गुण प्याला ॥ ४ ॥

लोगों के भावें भक्ति कमावे साहिब के मुख
जब लग दरशे ना सच्चा सांई होवे ना घट उजियाला ।
बिन सत्गुरु ताली नहीं लागे खुले न भ्रम का ताला ॥ २ ॥

गठरी खोल लाल नहीं परखा इस विधि आया दिवाला ॥ ३ ॥
साध संत की सेवा करले सन्तों का देश निराला ।
कहत कबीर सुनों भाई साधो पीलो निगुर्ण प्याला ॥ ४ ॥

शब्द ३२

सुना है हमने निर्बल के बल राम ॥ टेक ॥
जब तक गज बल अपनो कीनो सरो ना एकहु काम ।
जब गज ने हरि नाम सम्हारो आ गये आधे नाम ॥ १ ॥
दीन होय जब द्रोपदी टेरी बसन रूप धरा श्याम ॥ २ ॥

बहुत ही साख सुनी सन्तन की अड़े संभारे हैं काम।
नरसी भक्त की हुण्डी पेली दिये रोकड़ा दाम ॥ ३ ॥
जप बल तप बल और भुजा बल चौथे बल हैं दाम।
कहत कबीर सुनो भाई साधो हारे के हरि नाम ॥ ४ ॥

शब्द ३३

कछु लेना ना देना मगन रहना ॥ टेक ॥
पांच तत्त्व का बना पिंजरा जामें बोले मेरी मैना ॥ १ ॥
तेरा पिया तेरे घट में बसत है सखी खोल कर देखो नैना ॥ २ ॥

गहरी नदिया नाव पुरानी खेवटिया से मिले रहना ॥ ३ ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो गुरु के चरण से लिपट रहना ॥ ४ ॥

शब्द ३४

कछु लेना ना देना मगन रहना ॥ टेक ॥

जामें बोले मेरी मैना ॥ १ ॥

पाँच तत्त्व का बना पिंजरा ... खोल कर देखो नैना ॥ २ ॥

गहरी नदिया नाव पुरानी खेवटिया से मिले रहना ॥ ३ ॥

कहैं कबीर सुनो भाई साधो गुरु के चरण से लिपट रहना ॥ ४ ॥

शब्द ३४

जन्म तेरो बातां में बीत गयो, तैंने कबहूं न राम कह्यो ॥ टेक ॥

पांच बरस का भोला भाला अब तो बीस भयो ।

मकर पचीसी माया कारण देश विदेश गयो ॥ १ ॥

तीस बरस की अब मति उपजी लोभ बढै नित नयो ।

माया जोड़ी लाख करोड़ी अजहूं न तृप्त भयो ॥ २ ॥

वृद्ध भयो जब आलस्य उपज्यो जप तप कण्ठ रह्यो ।
साध की संगति कबहूं न कीनी वृथा जन्म गह्यो ॥ ३ ॥
यह संसारर मतलब का लोभी झूंठो ठाठ ठयो ।
कहत कबीर समझ मन मूरख तू क्यों भूल गयो ॥ ४ ॥

शब्द ३५

मैं तेरा स्वामी मुझे ना दिल से भूल टेक
तुही धरन में तुही गगन में तू मूलन का मूल ॥ १ ॥
तुही डार में तुही पात में तुही रंगीला फल ॥ २ ॥

गोपी चन्द भरथरी राजा सिर में डारी धूल ॥ ३ ॥
दास कबीर शरण तेरी आयो होवे अर्ज कबूल ॥ ४ ॥

मैं तेरा स्वामी मुझे ना दिल से भूल
तुही धरन में तुही गगन में तू मूलन का मूल ॥ १ ॥
तुही डार में तुही पात में तुही रंगीला फूल ॥ २ ॥

गोपी चन्द भरथरी राजा सिर में डारी धूल ॥ ३ ॥
दास कबीर शरण तेरी आयो होवे अर्ज कबूल ॥ ४ ॥

शब्द ३६

मोको कहां ढूंढे रे बन्दे मैं तो तेरे पास में ॥ टेक ॥
ना तीरथ में ना मूरत ना एकान्त निवास में।
ना मन्दिर में ना मसजिद में ना काशी कैलाश में ॥ १ ॥
ना मैं जप में ना मैं तप में ना मैं व्रत उपवास में।
ना मैं क्रिया करम में रहता ना मैं योग संन्यास में ॥ २ ॥

नहीं प्राण में नहीं पिण्ड में ना ब्रह्माण्ड आकाश में ।
ना मैं त्रिकुटी भंवर गुफा में सब श्वासन की श्वास में ॥ ३ ॥
खोजी होय तुरत मिल जाऊं एक पल ही की तलाश में ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो मैं तो हूं विश्वास में ॥ ४ ॥

शब्द ३७

बने जो कुछ धर्म करले, यही एक साथ जावेगा ।
गया अवसर न तेरे फिर यह, हरगिज़ हाथ आवेगा ॥ टेक ॥
दिवाना होकर दुनियां में, समय अनमोल खोता है ।

दिये लाखों की दौलत भी, न पल रहने तू पावेगा ॥ १ ॥
धरी रह जायगी तेरी अकड़, सारी ठिकाने पर ।
पकड़ कर धर दबावेगा ॥ २ ॥

बने जो कुछ धर्म करले, यही एक साथ जावेगा ।
गया अवसर न तेरे फिर यह, हरगिज़ हाथ आवेगा ॥ टेक ॥

दिये लाखों की दौलत भी, न पल रहने तू पावेगा ॥ १ ॥
धरी रह जायगी तेरी अकड़, सारी ठिकाने पर ।
जब आके यम जकड़ गरदन, पकड़ कर धर दबावेगा ॥ २ ॥
कुटुम्ब परिवार सुत जोई, सहायक होगा ना कोई ।
तेरे पापों की गठरी खुद, तू ही सिर पर उठावेगा ॥ ३ ॥
गर्भ में था कहा तूने, न भूलूंगा प्रभु तुझको ।
भला तू जाय के अपना, उसे क्या मुंह दिखावेगा ॥ ४ ॥
तुझे तो घर से जंगल में, तेरा ही खुद बखुद बेटा ।

सुलगा कर लकड़ियों के ढेर, पर तुझको जलावेगा ॥ ५ ॥
कहैं कबीर समझाई, तू कहना मान ले भाई ।
नहीं तो अपनी ठुकराई, वृथा सारी गंवावेगा ॥ ६ ॥

शब्द ३८

नारद मुनि मेरे सन्तों से अन्तर नाहीं (नारद मुनि ज्ञानी)॥ टेक
सन्त चलैं पाछे उठ चालूं मोहि सन्तन की आशा ।
जहां मेरे साधु भजन करैं हैं वहीं हमारा बासा ॥ १ ॥
साध नेमें जहां भोजन जेमूं साध सोवें तहां सोऊं ।

जो कोई मेरा सन्त सतावे लाख जतन कर खोऊं ॥ २ ॥

जो कोई मेरा सन्त सतावे लाख जतन कर खोऊं ॥ २॥

लक्ष्मी मेरी अर्ध शरीरी सो सन्तन की दासी ।

अठसठ तीर्थ सन्तों के चरण कोटि गया और काशी ॥ ३ ॥

मन करम वचन चरण चित लावे सोई परम पद पावे ।

कहै कबीर सुनो भाई साधो हरि अपने मुख गावे ॥४॥

शब्द ३६

मैं हार गई मेरे राम धन्धो करती २ घर को ॥ टेक ॥

ऊठ सवेरे पीसन लागी रह्यो पहर को तड़को ।

आग गेर पानी ने चाली दे छोरा के जरको ॥ १ ॥
सुसर स्वभाव आकरो कह्यो बड़बड़ाट को मड़को ।
सास निपूती कह्यो न माने बैठी मार मचड़को ॥ २ ॥
नणद हठीली हठ की पकी सहज बुरो देवर को ।
पीस पोय के हुई नचीती अब ले बैठी चरखो ॥ ३ ॥
चार पहर धन्धे में खोये नाम लियो ना हर को ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो चौरासी को धड़को ॥ ४ ॥

शब्द ४०

हमारे प्रभु अवगुण चित्त ना धरो ॥ टेक ॥

नणद हठीली हठ की पकी सहज बुरा देवर को ।
पीस पोय के हुई नवीती अब ले बैठी चरखो ॥ ३ ॥
चार पहर धन्धे में खोये नाम लियो ना हर को ।

शब्द ४०

हमारे प्रभु अवगुण चित्त ना धरो ॥ टेक ॥
समदर्शी है नाम तिहारो चाहो तो पार करो ॥
इक नदिया इक नार कहावत मैलो नीर भरो ।
जब मिल गयो तब रूप एक भयो गंगा नाम परो ॥ १ ॥
एक लोहा पूजा में राख्यो एक घर बधिक परयो ।
ऊंच नीच पारस नहीं जाने कंचन करत खरो ॥ २ ॥
अब की बेर मोहें नाथ उबारो नहीं प्रण जात टरो ।

यह माया भ्रम जाल निवारो सूरदास सगरो ॥ ३ ॥

शब्द ४१

लज्जा मेरी राखो ना श्याम हरी ।
कीनी कठिन दुशासन मो से गह केसों पकड़ी ॥
आगे सभा दुष्ट दुर्योधन चाहत नगन करी ।
पांचों पण्ड सभी बल हारे इन से कछु न सरी ॥ १ ॥
भीम द्रोण विदुर भये विस्मय इन सब मौन धरी ।
अब नहीं मात पिता सुत बान्धव एक टेक तुमरी ॥ २ ॥

वसन प्रवाह दिये करुणानिधि सेना हार परी ।
सूरदास जब सिंह शरण लई स्यारों की काहि डरी ॥ ३ ॥

वसन प्रवाह दिये करुणानिधि सेना हार परी ।
सूरदास जब सिंह शरण लई स्यारों की काहि डरी ॥ ३ ॥

शब्द ४२

चले गये दिल के दामन गीर ॥ टेक ॥
जब सुध आवे तुमरे दर्श की उठें कलेजे पीर ॥ १ ॥
नटवर भेष नयन रतनारे सुन्दर श्याम शरीर ॥ २ ॥
वृन्दावन वंशीवट त्यागो निर्मल जमना नीर ॥ ३ ॥
आपन जाय द्वारका छाये खारी नद के तीर ॥ ४ ॥

सब गोपियन को नेह बिसारो ऐसे भये बे पीर ॥ ५ ॥
सूरदास ललिता उठ बोली आखिर जात अहीर ॥ ६ ॥

शब्द ४३

किन तेरो गोविन्द नाम धरो ॥ टेक ॥ १ ॥
लेन देन के तुम हितकारी मोते कछुना सरो ।
विप्र सुदामा कियो अयाचक तन्दुल भेट धरो ॥ २ ॥
द्रुपद सुताकी तुम पत राखी अम्बर दान करो ॥ ३ ॥
सन्दीपन के तुम सुत लाये विद्या पाठ पढ़ो ॥ ४ ॥

सूर की बिरियां निठुर हो बैठे कानन मून्द धरो ॥ ५ ॥

शब्द ४४

लेन देन के तुम हितकारी मोते कछुना सरो ।
विप्र सुदामा कियो अयाचक तन्दुल भेट धरो ॥ २ ॥
द्रुपद सुताकी तुम पत राखी अम्बर दान करो ॥ ३ ॥
... के बस सब जाये विद्या पाठ पढ़ो ॥ ४ ॥

सूर की बिरियां निठुर हो बैठे कानन मून्द धरो ॥ ५ ॥

शब्द ४४

सब दिन होत न एक समान ॥ टेक ॥

एक दिन राजा हरिश्चन्द्र गृह, सम्पति मेरु समान ।
एक दिन जाय श्वपच घर सेवत, अम्बर हरत मशान ॥ १
एक दिन दूलह बनत बराती चहुंदिश ढुरत निशान ।
एक दिन डेरा होत जंगल में कर सूधे पग तान ॥ २ ॥
एक दिन सीता रुदन करत है महा बिपन उद्यान ।

एक दिन रामचन्द्र मिल दोऊ विचरत पुष्प विमान ॥ ३ ॥
एक दिन राजा राज युधिष्ठिर अनुचर श्री भगवान ।
एक दिन द्रोपदी नग्न होत है चीर दुशासन तान ॥ ४ ॥
प्रकटत है पूरव की करनी तज मन शोच अजान ।
सूरदास गुण कहं लग बरनों विधि के अङ्क प्रमान ॥ ५ ॥

शब्द ४५

अंखियां मोहन की बिन देखे रहा न जाय ॥ टेक ॥
जिन नयनन में श्याम बसत है दूजा नाहीं सुहाय ॥ १ ॥

काजर रेख किरकिरा लागे सुरमा नहीं ठहराय ॥ २ ॥

सूरदास गुण कहं लग वरना विधि के अंक

शब्द ४५

अंखियां मोहन की बिन देखे रहा न जाय ॥ टेक ॥

काजर रेख किरकिरा लागे सुरमा नहीं ठहराय ॥ २ ॥
मेरे अंगना में आय के रे मटकी लेत उठाय ॥ ३ ॥
और के डरते डरपत नाहीं जसुधा देख डराय ॥ ४ ॥
वंशी वारे मोहना वंशी नेक बजाय ॥ ५ ॥
तेरी वंशी ने मेरो मन हरो घर अंगना न सुहाय ॥ ६ ॥
सूरदास प्रभु तुमरे मिलन को हरिसों हेत लगाय ॥ ७ ॥

शब्द ४६

भजोरे मन शुद्ध सच्चिदानन्द ॥ टेक ॥

सकल ब्रह्माण्ड पुकारें जिनको अनन्त अपार अखण्ड ॥ १ ॥
पुष्प कुमार गगन में तारे वरणत सूरज चन्द ॥ २ ॥
सभी वस्तु की सुन्दरतायें जितलावें गोविन्द ॥ ३ ॥
ओंकार अज ज्योति स्वरूपा पूरण परमानन्द ॥ ४ ॥

शब्द ४७

तेरा यह खेल अपारा है जित देखूं तित तूही तू है ॥ टेक ॥
तूही वन में तूही घर मन्दिर में कूप बावड़ी तूही सरवर में ।
तुही सबका करतार भरम से न्यारा है ॥ १ ॥

इन्द्रियों में देखा तूही मन है शुद्ध करण में तूही पवन है ।

शब्द ४७

तेरा यह खेल अपारा है जित देखूं तित तू ही तू है
तूही बन में तूही घर मन्दिर में कूप बावड़ी तूही सरवर में।
तूही सबका करतार भरम से न्यारा है ॥ १ ॥

इन्द्रियों में देखा तूही मन है शुद्ध करण में तूही पवन है।
बरुणों में तूही बरुण जलों में गंगा धारा है ॥ २ ॥
ज्ञानी में ब्रह्म ज्ञान तूही है योगी का मुख ध्यान तुही है।
सबका जीवन प्राण तूही आधारा है ॥ ३ ॥
फूल पात फल डार तूही है कालों का महाकाल तुही है।
परमानन्द प्रकाश शब्द ओंकारा है ॥ ४ ॥

शब्द ४८

मेरे हो मन माना है गुरु नज़र निहाल दयाल ॥ टेक ॥

अधर अकाश अधर वाको बंगाला घट २ आप समाना है ॥ १ ॥
सब से परे दूर नहीं नेड़े अद्भुत रूप लखाना है ॥ २ ॥
भवसागर से उतरण कारण गुरु शब्द जलयाना है ॥ ३ ॥
षड़ दरशन में पड़ी खट पटी बड़ा सोई जिन जाना है ॥ ४ ॥
घीसा सन्त शरण सतगुरु की जिन डारा मान गुमाना है ॥ ५ ॥

शब्द ४६

तू तो कोई अजब है तेरा अजब तमाशा जग में जोर ॥ टेक ॥
तूही राम तैंने रावण मारा तू है नन्दकिशोर ।

तूही इन्द्र इन्द्रासन तेरा तू बरसे घन घोर ॥ १ ॥

घीसा सन्त शरण सतगुरु की जिन ...

शब्द ४६

तू तो कोई अजब है तेरा अजब तमाशा जग में जोर ।। टेक ।।

तूही इन्द्र इन्द्रासन तेरा तू बरसे घन घोर ।। १ ।।
तूही ब्रह्मा तूही विष्णु महादेव तू कमलापति गौर ।
रूपों में सब रूप धरे हैं तूही करे है किलोल ।। २ ।।
पांच तत्व और तीन गुणों में दशों दिशा चहुं ओर ।
पिंड ब्रह्माण्ड में तूही विराजे तू पूर्ण सब ठौर ।। ३ ।।
तूही गुप्ता तूही मुक्ता घट घट ब्रह्म चकोर ।
चरणदास रोचक कूं भाषे दूजा नहीं है कोई और ।। ४ ।।

शब्द ५०

मेरा राम सनेही जोगी रावलिया मेरी नगरी में उतरा है आय ॥
चार कूंट की रम्मत करता धरती धरे न पांव ।
तीन लोक झोली में राखे राई में रह्यो समाय ॥ १ ॥
आओ सखी याहि देखलें जाका रूप लखा नहीं जाय ।
पीड़ो चाहे परतीत न छोड़ूं मेरे हिरदे में रह्यो समाय ॥ २
बरजी काहु की ना रहूं बिन हर देखे रहा न जाय ।
अचरज रूप धरा अविनाशी श्रीनाथ गुलाब लुभाय ॥ ३ ॥

शब्द ५१

घूंघट खोल दे तेरे पलकों के आगे है राम, भरमने तोड़दे ॥ टेक ॥
... बावरी नर रहा भरपूर ।

पीड़ो चाहे परतीत न छाड़ू मेर हिरदे
बरजी काहु की ना रहूं बिन हर देखे रहा न जाय ।
अविनाशी श्रीनाथ गुजात लुवाय ।। ३ ।।

शब्द ५१

घूंघट खोल दे तेरे पलकों के आगे है राम, भरमने तोड़दे ।। टेक ।।

पलकों आगे अलख बावरी नूर रहा भरपूर ।
अन्दर बाहर सर्वस भरिया क्या नेड़े क्या दूर ।। १ ।।

शिर से शक्त उतार चुनरिया परदा भरम उठाय ।
जब तुझे दरसे नित्य बावरी रोम रोम रह्यो छाय ।। २ ।।

पुस्तक लिखिया न जाय बावरी रेख खिचे ना लीक ।
द्रष्टिन मुष्टिन आवे सजनी पवना ते बारीक ।। ३ ।।

दरिया लहर भेद ना बौरी जीव ब्रह्म ना दोय ।
एक ही ब्रह्म सकल घट व्यापी दिल की दुरमत खोय ॥
हाथ में कंगन बांध सुहागन काहि को लिया दुहाग ।
हाथ में मेंहदी नयनन सुरमा सारो श्री नाथ गुलाब ॥ ५ ॥

शब्द ५२

बादला झुक आया भीजे म्हारी काया रो चीर ॥ टेक ॥
प्रेम घटा ओलर आइरे गगन से तनमन भीज गया हरि रंग से ।
बरसे निर्मल नीर इन्दु ज्यों लहराया ॥ १ ॥

जहां बरसे तहां बिजली चमके घन गरजे और दामिनी दमके ।
बर्षे अमृतधार इन्द्र ज्यों झड़ लाया ॥ २ ॥

बादला झुक आया भीजे म्हारी काया रो चीर ॥ टेक ॥
प्रेम घटा ओलर आइरे गगन से तनमन भीज गया हरि रंग से।
बरसे निर्मल नीर इन्द्र ज्यों लहराया ॥ १ ॥

जहां बरसे तहां बिजली चमके घन गरजे और दामिनी दमके।
बर्षे अमृतधार इन्द्र ज्यों झड़ लाया ॥ २ ॥
बस्ती बसो चाहे बन उठ जाओ तीरथ जायो चाहे मलमल न्हाओ।
जिनका तन मन भया फ़क़ीर शब्द में चित लाया ॥ ३ ॥
नाथ गुलाब दिया गुरु हेला भानी नाथ सुनो निज चेला।
उलट पवन को डाट गगन थारो घर छाया ॥ ४ ॥

शब्द ५३

जिन्होंने मन मार लिया मैं तो उन सन्तों का हूं दास ॥ टेक ॥

आपा मार जगत में बैठे नहीं किसी से काम ।
उन में तो कुछ अन्तर नाहीं सन्त कहो चाहे राम ॥१॥
मन मारा तन बस किया सभी भरम भये दूर ।
बाहर तो कुछ सूझे नाहीं अन्दर झलके नूर ॥२॥
प्याला पी लिया नाम का जी छोड़ा जगत का मोह ।
हमको सत्गुरु ऐसे मिल गये सहज मुक्ति गई होय ॥३॥
नरसी जी के सत्गुरु स्वामी दिया अमीरस प्याय ।
एक बूंद सागर में मिल गई कहा करे यम राय ॥४॥

भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा ।

प्याला पी लिया नाम का
हमको सत्गुरु ऐसे मिल गये सहज मुक्ति गई होय ॥ ३॥
नरसी जी के सत्गुरु स्वामी दिया अमीरस प्याय ।
एक बूंद सागर में मिल गई कहा करे यम राय ॥ ४॥

भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा।

यह आश्रम रेवाड़ी जंकशन से पश्चिम दिशा में लगभग एक कोस के अन्तर पर जंगल में अति पवित्र भूमि में बना है जल की सुविधा के लिये तीन कूप और एक तालाब है। तालाब में कुछ पक्के घाट बनाये गये हैं। १०० बीघा भूमि में उपयोगी वृक्ष लगा कर उपवन बनाया गया है। आश्रम से

लगी हुई ५०० बीघा भूमि गौओं के चरने के लिये श्री० लेफ्टीनेन्ट रावबहादुर राव बलवीरसिंह जी ने आश्रम को प्रदान की है, जिसमें गौ, मृग आदि स्वच्छन्द विचरते हैं।

इस आश्रम में एक ब्रह्मचर्याश्रम, साधारण पाठशाला, कन्यापाठशाला व अछूत पाठशाला और अतिथियों व सत्संगियों के ठहरने का स्थान व पुस्तकालय है।

ब्रह्मचर्याश्रम

इस समय आश्रम में २५ ब्रह्मचारी हैं। यह प्राचीन

कन्यापाठशाला व अछूत पाठशाला और अतिथियों व सत्सं-
गियों के ठहरने का स्थान व पुस्तकालय है।

ब्रह्मचर्याश्रम

इस समय आश्रम में २५ ब्रह्मचारी हैं। यह प्राचीन ऋषियों की भांति गुरुजनों की सेवा व स्वावलम्बन का जीवन व्यतीत करते हुए विद्योपार्जन करते हैं, इनका भोजन व रहन सहन इतना सादा है कि एक ब्रह्मचारी का समस्त खर्च ५) मासिक है। स्वावलम्बी इतने हैं कि इन्होंने एक ६५ फीट गहरा कूप स्वयं ही खोद लिया है। संस्कृत, देवनागरी, इतिहास, अंग्रेजी इत्यादि सब प्रकार की शिक्षा दी जाती है।

व्याख्यान देना भी सिखाया जाता है।

कन्यापाठशाला—इनका जीवन भी बहुत सादा व तप का बनाया जाता है। संस्कृत, देवनागरी, गणित की शिक्षा इनको दी जाती है। रामायण व गीता इनके मुख्य ग्रन्थ हैं।

अछूत पाठशाला व साधारण पाठशाला में निकटवर्ती ग्रामों के बालक पढ़ने आते हैं। अछूतों को आश्रम में रखने का विचार हो रहा है। पुस्तकालय आरम्भिक अवस्था में है, धार्मिक ग्रन्थों का साधारण संग्रह हुआ है, हां एकान्त शांत

स्थान के कारण यह छोटा पुस्तकालय भी बड़ा उपयोगी है।

रामपुरा आश्रम की भांति दादरी, गढ़ीबोलनी, जोड़िया, खोयरी, पालम, दादरी, भटिन्डा

इनको दी जाती है। राम

अछूत पाठशाला व साधारण पाठशाला

ग्रामों के बालक पढ़ने आते हैं। अछूतों को आश्रम

का विचार हो रहा है। पुस्तकालय आरम्भिक अवस्था में है,

स्थान के कारण यह छोटा पुस्तकालय भी बड़ा उपयोगी है।

रामपुरा आश्रम की भांति दादरी, गढ़ीबोलनी, जोड़िया, खेटांवास, निखरी, नूरगढ़, खोयरी, पालम, दादरी, भटिन्डा आदि अन्य स्थानों में भी इसी प्रकार के आश्रम खोले गये हैं। इन आश्रमों के द्वारा बिना मूल्य शिक्षा, सुख, शान्ति, प्रेम, निष्काम सेवा व भगवान् की भक्ति का प्रचार करना एक मात्र उद्देश है—

आश्रम के उद्देश्य।

१—श्री भगवान् की भक्ति का प्रचार करना।

२—गौरक्षण और उसके लिये गोचर भूमि छुड़वाना।

३—जंगलों में वृक्ष लगवाना और बीच में जलाशय बनवाना।

४—शिक्षा का प्रचार करना (जिसमें मनुष्यमात्र विद्यालाभ करसकें) और प्राचीन प्रथा का फिर प्रचलित करना।

५—बीमारियों के अवसर पर दवाई बांटना।

६—आस पास के ग्रामों में परस्पर के झगड़े और वैमनस्य मिटा कर शान्ति और प्रेम बढ़ाना।

७—सब संस्थाओं में भगवद्भक्ति और धर्म का भाव जागृत करना।

६—आस पास के ग्रामों में परस्पर के झगड़े और वैमनस्य मिटा कर शान्ति और प्रेम बढ़ाना।

७—सब संस्थाओं में भगवद्भक्ति और धर्म का भाव जागृत करना।

८—राजा और प्रजा सब ही का हित चिन्तन करना।

यह आश्रम नियमानुसार एक कमेटी की संरक्षता में है आश्रम से सत्यशब्द-संग्रह, सारसंग्रह और भक्तियोग-संग्रह महसूल डाक के टिकट भेजने पर मुफ्त भेजी जाती है।

नोट—आश्रम से "ज्ञानयोग भक्तिमार्ग" नाम का मासिक पत्र हिन्दी भाषा में प्रकाशित करने का विचार है यदि भक्तजन यत्न करके ५०० ग्राहकों के नाम भेजदें तो पत्र शीघ्र जारी कर दिया जावे।

शब्द ५४

काम क्रोध मद लोभ मोह ने हो गुरु इनने मेरी मत मारी ॥टेक॥
केवल ब्रह्म रूप था मेरा पांच तत्व में लिया बसेरा ।

शब्द ५४

काम क्रोध मद लोभ मोह ने हो गुरु इनने मेरी मत मारी ॥टेक॥
केवल ब्रह्म रूप था मेरा पांच तत्व में लिया बसेरा ।
इन्द्रिय आदि कर्म से लागी बुद्धि है सब से न्यारी ॥१॥
आदि जन्म का हूं अधिकारी दुःख में याद आई बुध सारी ।
मनुवा खोज कनौज के देखा बिगड़ रही केशर क्यारी ॥ २
शून्य समाधि में जाय समाया चेला गुरवा कुछ नहीं पाया ।
आप ही आप पुकारत आया अब समझा मूरख सारी ॥ ३

सहज ही आसन अमर सिंहासन धुन में प्राण करे सुखवासन
शरण मछन्दर गोरख बोले जान जाव हुआ हितकारी ॥ ४

शब्द ४५

सत्य नाम करतारे म्हारे सतगुरु निश्चय लड़ी बहारे मोरे रामा ॥
राजा राम बसे घट भीतर बाहिर हाथ न आवे मोरे रामा ।
सतगुरु की तुम सेवा करलो वो तुम्हें राह बतावें मोरे रामा ॥ १ ॥
नाभि कमल से रस्ता चाल्यो सहज ही आवे जावे मोरे रामा ।
आगे महल त्रिकुटी कहिये वहां गये सुख पावे मोरे रामा ॥ २ ॥

महल त्रिकुटी जग मग झलके देखत ही मुसकावे मोरे रामा ।
झीनी झीनी बाज होत अनहद की आगेको उठधावे मोरे रामा ॥
खोजेंगे सोई पावें मोरे रामा ।
गुरु प्रताप सन्त की सेवा दरशावें मोरे रामा ॥

नाभि कमल से रस्ता चाल्यो सहज ही आवे जावे मोरे रामा ।
आगे महल त्रिकुटी कहिये वहां गये सुख पावे मोरे रामा ॥ २ ॥

महल त्रिकुटी जग मग झलके देखत ही मुसकावे मोरे रामा ।
झीनी झीनी बाज होत अनहद की आगेको उठधावे मोरे रामा ॥
गुरु प्रताप सन्त की सेवा खोजेंगे सोई पावें मोरे रामा ।
शरण मछन्दर जती गोरख बोले गुरु अपना दरशावें मोरे रामा ॥

शब्द ५६

बंगला भला बना दरवेश जा में नारायण परवेश ॥ टेक ॥
पांच तत्व की ईंट बनाई तीन गुणों का गारा ।
छत्तीसों की छात बना कर चिनगया चिनने हारा ॥ १ ॥

इस बंगले के दश दरवाजे बीच पवन का थंभा ।
आवत जावत कोऊ न जाने देखो बड़ा अचम्भा ॥ २ ॥
इस बंगले में चौपड़ मांडी खेलें पांच पचीस ।
कोई तो बाजी हार चला है कोई चला जुग जीत ॥ ३ ॥
इस बंगले में पातर नाचे मनुवां ताल लगावे ।
सुरत निरत के पहर घूंघरू राग छत्तीसों गावे ॥ ४ ॥
कहें मछन्दर सुन बाले गोरख जिन यह बंगला गाया ।
इस बंगले के गाने वाला बहुर जन्म नहीं आया ॥ ५ ॥

शब्द ५७

मारग में लूटैं पांच जनी ॥ टेक ॥
पांच पचीसों ने घेरा घाटा साधु जन चढ़ गये उलटी बाटा ।
कलियुग चमके सेल अनी ॥ १ ॥

इस बंगले में पातर नाचे मनुवां ताल लगावे ।
सुरत निरत के पहर घूंघरू राग छत्तीसों गावे ।। ४ ।।
कहैं मछन्दर सुन बाले गोरख जिन यह बंगला गाया ।

शब्द ५७

मारग में लूटैं पांच जनी ।। टेक ।।

पांच पच्चीसों ने घेरा घाटा साधु जन चढ़ गये उलटी बाटा ।
घेर लिया सब औघट घाटा कलियुग चमके सेल अनी ।। १ ।।
बन में लुट गये मुनि जन नागा डस गई ममता उलटा भागा ।
जा के कान गुरु ना लागा श्रृंगि ऋषि से आन बनी ।। २ ।।
आशा तृष्णा नदियां भारी बह गये संत बड़े डिमधारी ।
जो उभरे सो शरण तिहारी पार लगाइयो आप धनी ।। ३ ।।

शकर लुट गये नेजा धारी परजा रैयत कौन विचारी ।
भूल पड़ी कर्मन की मारी तिरगुण झुक रही तीन अनी ॥ ४ ॥
रामानन्द दिया गुरु हेला दास कबीर चरणन का चेला ।
बंका मार्ग पंथ दुहेला सुमरो सिरजनहार धनी ॥ ५ ॥

शब्द ५८

तीरथ में मायाजाल में फंसी सुरत मेरी राम से लगी समझ
सुहागन सुरता नार ॥ टेक ॥
लगनी लंहगा पहर सुहागन बीती जाय बहार ।
धन जोवन है पाहुना री आवे न दूजी वार ॥ १ ॥

राम नाम का चुड़ला पहरो निर्गुण सुरमा सार ।
नख बेसर हरि नाम की री उतर चलो न परले पार ॥ २ ॥
ऐसे घर को कहा करूं जो जन्मतड़ा मर जाय ।

राम नाम का चुड़ला पहरो निर्गुण सुरमा सार ।
नख बेसर हरि नाम की री उतर चलो न परले पार ॥२॥
ऐसे वर को कहा करूं जो जन्मतड़ा मर जाय ।
वर पाऊं श्री सांवरो जी चुड़ला अमर होजाय ॥३॥
मैं जान्यो हरि मैं ठग्यो जी हरि ठग ले गयो मोय ।
लख चौरासी मोरचे जी पल में डारे तोर ॥४॥
सुरत चली जहां मैं चली निरंकार झनकार ।
अविनाशी की पीर पर रे मीरां करे पुकार ॥५॥

शब्द ५६

सो राणी जी तैं ज़हर दियो म्हाने जानी ॥ टेक ॥
भर २ दिये ज़हर के पियाले व्हैगयो अमृत पानी ॥१॥
जब लग सोना कसिये नाहीं होत न बारा बानी ॥ २ ॥
मोय भरोसा श्याम सुन्दर का मेरी घट्ट न कानी ॥ ३ ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर चरण कमल लिपटानी ॥४॥

शब्द ६०

पिया बिन सनो छै म्हारो देश ॥ टेक ॥

ऐसा है कोई पीय से मिलावे तन मन धन करूं पेश ॥ १ ॥
थारे कारण बन बन डोलूं कर जोगिन का भेष ॥ २ ॥
प्रीतम पियारे दरश दिखाजा तुम बिन बहुत क्लेश ॥ ३ ॥

शब्द ६०

पिया बिन सनो छै म्हारो देश ॥ टेक ॥

ऐसा है कोई पीय से मिलावे तन मन धन करूं पेश ॥ १ ॥
थारे कारण बन बन डोलूं कर जोगिन का भेष ॥ २ ॥
प्रीतम पियारे दरश दिखाजा तुम बिन बहुत क्लेश ॥ ३ ॥
अवधि बदी थी अजहूं न आये रूपा हो गये केश ॥ ४ ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर तज दियो नगर नरेश ॥ ५ ॥

शब्द ६१

अरी एरी ऊदां लागी का नाम न ले ॥ टेक ॥
जल से प्रीत करी मछली ने तड़फ तड़फ जिया दे ॥ १ ॥

नादों से प्रीत लगी मिरगों की सन्मुख सेल सहें ॥ २ ॥
दीपक से प्रीत पतंग की लागी बार फेर जिया दे ॥ ३ ॥
मीरां की प्रीत लगी है सन्तों से गुरु चरणों चित्त दे ॥ ४ ॥

शब्द ६२

पालिक कुल आलम के हो तुम सच्चे श्री भगवान ॥ टेक
सूरज चान्द पवन और पानी धरती बीच असमान ।
सब में जलवा तेरा ही देखा कुदरत पर कुरबान ॥ १ ॥
भारत में अर्जुन की खातिर आप बने रथवान ।

उसने अपने कुल को देखा छुट गये तीर कमान ॥ २ ॥
ना कोई मारे ना कोई मरया तेरा ही अज्ञान ।

सब में जलवा तेरा ही देखा
भारत में अर्जुन की खातिर आप बने रथवान ।

उसने अपने कुल को देखा छुट गये तीर कमान ॥ २ ॥
ना कोई मारे ना कोई मरया तेरा ही अज्ञान ।
आतम एक अचल अविनाशी यह गीता को ज्ञान ॥ ३ ॥
मुझ आजिज़ पर किरपा कीजो बन्दा अपना जान ।
मीर माधो शरण तुम्हारी लाग्यो चरणन से ध्यान । ४ ॥

शब्द ६३

रघुबर तुम को मेरी लाज ॥ टेक
सदा सदा मैं शरण तिहारी तुम हो ग़रीब निवाज़ ॥ १ ॥

पतित उधारण बिरद तिहारो श्रवण सुनी अवाज़ ॥ २ ॥
हूं तो पतित पुरातन कहियो पार उतारो जिहाज़ ॥ ३ ॥
अघ खण्डन दुःख भंजन जन के यही तिहारो काज ॥ ४ ॥
तुलसीदास पर किरपा करियो भक्ति दान दो आज ॥ ५ ॥

शब्द ६४

सिया रघुबीर भरोसो ऐसो ॥ टेक ॥
बारि न बोरि सक्यो प्रहलादहि, पावक नाहिं जरयोसो ।
हिरणाकुश बहु भांति सतायो हठ कर बैर करयोसो ।

मारयो चाहे दास नर हरिको आपहि दुष्ट मरयोसो ॥ २ ॥
मीरा के मारण के कारण पठयो ज़हर खरयोसो ।

हिरणाकुश बहु भांति सतायो हठ कर बर करयोसो ।

मारयो चाहे दास नर हरिको आपहि दुष्ट मरयोसो ॥ २ ॥
मीरा के मारण के कारण पठयो ज़हर खरयोसो ।
रामकृपा ते अमृत हुगयो ताको हंसि हंसि पान करयोसो॥३॥
द्रुपद सुता को चीर दुशासन राज सभा पकरयोसो ।
ऐंचत ऐंचत भुज बल हारे नेक न अंग उघरयो सो ॥ ४ ॥
भारत में भंवरी के अण्डा कोटिन दल बटरयोसो ।
राम नाम जब पक्षि टेरयो घंटा टूटि परयोसो ॥ ५ ॥
लंका जारि अंजनी नन्दन देखत पुर सगरयोसो ।

ताके मध्य विभीषण को गृह राम कृपा उबरयोसो ॥ ६ ॥
रावण सभा कठिन प्रण अंगद हिय धर हरि सुमरयोसो ।
मेघनाद सम कोटिन योधा लागे पग न टरयोसो ॥७॥
तुलसीदास विश्वास राम पद जो नर नारी करयोसो ।
और प्रभाव कहां लग बरणों जेहि यमराज डरयोसो ॥८॥

शब्द ६५

ऊधो करमन की गति न्यारी ॥ टेक ॥
सब नदियां जल भर भर रहियां सागर किस विध खारी ।

उज्ज्वल पंख दिये बगुला को कोयल किस गुण कारी ॥ २ ॥
सुन्दर नयन मृगा को दीने बन बन फिरत उजारी ॥ ३ ॥

सब नदियां जल भर भर रहियां सागर किस विध खारी ।

उज्ज्वल पंख दिये बगुला को कोयल किस गुण कारी ॥ २ ॥
सुन्दर नयन मृगा को दीने बन बन फिरत उजारी ॥ ३ ॥
मूरख मूरख राजे कीने पण्डित फिरें भिकारी ॥ ४ ॥
सूर श्याम मिलवे की आशा छिन छिन बीतत भारी ॥ ५ ॥

शब्द ६६

मैं बारी जाऊं सतगुरु की मेरो कियो भरम सब दूर ॥ टेक ॥
प्यालो पियो नाम को घोर सजीवन मूर ।
चढ़ी खुमारी नाम की हगई चकना चूर ॥ १ ॥

विमल प्रकाश अकाश में लख्यो विना शशि सूर ।
मगन भयो मन गगन में सुन के अनहद तूर ॥ २ ॥
ममता घट समता बढ़ी उर अन्तर भर पूर ।
राग द्वेष जब से मिटे अब मन भायो मजूर ॥ ३ ॥
शब्द सुनत यम दूत के मुख में लागी धूर ।
आय मिले धर्मदास को सतगुरु हाल हजूर ॥ ४ ॥

शब्द ६७

चार वर्ण में सोई बड़ा जिन राधा कृष्णा रटा रटारें ॥ टेक ॥

काहे को जोड़ै माल खजाने काहे को चिनावत ऊंची अटा ।
जब यम की तलबी आयेगी छोड़ जाय सब लटा पटा ॥ १ ॥
यह दम हीरालाल अमोलक पल में जाता घटा घटा ।

चार वर्ण में सोई बड़ा जिन राधा कृष्णा रटा रटारे ॥टक॥

काहे को जोड़े माल खज़ाने काहे को चिनावत ऊँची अटा।
जब यम की तलबी आयेगी छोड़ जाय सब लटा पटा ॥ १ ॥
यह दम हीरालाल अमोलक पल में जाता घटा घटा।
कहां आया तू कौल करार कर यहां फिरता तू नटा नटा ॥ २ ॥
अपने कुटुम्ब को ऐसे देखे पलक उठाये पटा पटा।
जब हंसा चाल्यो जायगो छोड़ जाय तू लटा पटा ॥ ३ ॥
यह संसार मतलब का गुरजी बातें करता झूठ मिठा।
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि कानन कुण्डल मुकुट जटा ॥ ४ ॥

शब्द ६८

जगदीश्वर तुम्हारा सहारा हमें यहां दीखे न कोई हमारा हमें ॥
गर्भ यातना के संकट से करके कृपा जो उबारा हमें ॥ १ ॥
दाँत नहीं थे जब दूध दियो तब फिर भी कभी न बिसारा हमें ॥
सदा रह्यो साथी घट भीतर पल भर भी करते न न्यारा हमें ॥
जो कुछ सुख तुम देहु दयाकर क्या कोई देगा बिचारा हमें ॥
धर्मदास कहे भव वारिध से पार कबीर उतारा हमें ॥ ५ ॥

शब्द ६९

क्यों सोया ग़फलत का मारा जागरे नर जागरे ।

या जागे कोई योगी भोगी या जागे कोई चोर रे ॥
या जागे कोई सन्त पियारा लगी राम से डोर रे ।
ऐसी जागनि जाग प्यारे जैसी ध्रुव प्रहलाद रे ॥
ध्रुव को दीनी अटल पदवी दिया प्रहलाद को राज रे ।

या जागे कोई योगी भोगी या जागे कोई चोर रे ॥
या जागे कोई सन्त पियारा लगी राम से डोर रे ।
ऐसी जागनि जाग प्यारे जैसी ध्रुव प्रहलाद रे ॥
ध्रुव को दीनी अटल पदवी दिया प्रहलाद को राज रे ।
हरि सुमिरे सोई हंस कहावे कामी क्रोधी कागरे ॥
तन का चोला भया पुराना लगा दाग़ पर दाग़ रे ।
मन है मुसाफिर तन की सराय विच तू कीन्हा अनुराग रे ॥
साधु संग सत्गुरु की सेवा पावै अचल सुहाग रे ।

नितानन्द भज राम गुमानी नागन पूरन भाग रे ॥

शब्द ७०

बतादे सखी कौन गली गये श्याम ॥ टेक ॥
गोकुल ढूंढ वृन्दावन ढूंढा मथुरा में हो गई श्याम ॥ १ ॥
मथुरा ढूंढत रैन बिहानी रात कियो विश्राम ॥ २ ॥
भोर भयो जब वन २ ढूंढा पायो कदमन छांम ॥ ३ ॥
कहा कहूं वाके मुख की शोभा कोटि उदय भये भान ॥ ४ ॥
चन्द्र सखी भज बालकृष्ण छवि लजत कोटि शत काम ॥ ५ ॥

शब्द ७१

देश मेरा बांका है भाई जहां हंसा अमर हो जाई ॥ टेक ॥
देश मेरे की अद्भुत लीला वाकी थाह न पाई ।
शेष महेश गणेश थके हैं शारद मति भरमाई ॥ १ ॥

कहां कहूं वाकि मुख की शोभा ...

चन्द्र सखी भज बालकृष्ण छवि लजत कोटिशत काम ॥ ५ ॥

शब्द ७१

देश मेरा बांका है भाई जहां हंसा अमर हो जाई ॥टेक॥

देश मेरे की अद्भुत लीला वाकी थाह न पाई ।
शेष महेश गणेश थके हैं शारद मति भरमाई ॥ १ ॥

चाँद सूरज अग्नि तारों की ज्योति जहां मुरझाई ।
अर्ब खर्ब बिजली जहां चमके तिनकी छवि शरमाई ॥ २ ॥

देश मेरे का कठिन पन्थ है तुमसे चला न जाई ।
सन्त रूप धर के जाना हो नातर काल खे खाई ॥ ३ ॥

पर धन मिट्टी के सम जानों माता नार पराई ।
राग द्वेष की होली फूंको तज दो मान बड़ाई ॥ ४ ॥
सत्गुरु की नित्य शरण गहोरे चरणों में चित लाई ।
नाम रूप मिथ्या जग त्यागो तब वहां पहुंचो जाई ॥ ५ ॥
घाटी विकट निकट दरवाज़ा सत्गुरु राह बताई ।
बिन सत्गुरु वाकी राह न पावे लाख करो चतुराई ॥ ६ ॥
गुरु अपने को शीश नवाऊं आतम रूप लखाई ।
निर्भ्यानन्द हैं गुरु हमारे संशय दिये मिटाई ॥ ७ ॥

शब्द ७२

जगत में हरि सम मित्र न कोई ॥ टेक ॥
भाँति भाँति के देत पदारथ कृपा नीर से धोई ॥ १ ॥

शब्द ७२

जगत में हरि सम मित्र न कोई ॥ टेक ॥

भाँति भाँति के देत पदारथ कृपा नीर से धोई ॥ १ ॥

जो नर हरि सों करे मित्रता आप हरि सम होई ॥ २ ॥

हरि सुमरण सत्संग जगत में सार पदारथ दोई ॥ ३ ॥

भजो कन्हैयालाल हरि को वृथा जन्म मत खोई ॥ ४ ॥

शब्द ७३

वा घर जल्यो हे नींद जा घर राम नाम नहीं भावे ॥ टेक ॥

बैठ सभा में मिथ्या बोले निन्दा करै पराई ।
यह घर हमने तुझे बताया आय्यो बिना बुलाई ॥ १ ॥
के तू जय्यो राज द्वारे कै रसिया रस भोगी ।
हमारा पीछा छोड़ बावरी हम हैं रमते जोगी ॥ २ ॥
ऊंचा मन्दिर और सखीरी जहां कामिन चंवर डुलावें ।
हमरे संग क्या लेगी बावरी पत्थर पर दुःख पावें ॥ ३ ॥
कहैं भरतरी सुनरी निद्रा यहां नहीं तेरा वासा ।
हमतो रहते राम भरोसे गुरु मिलन की आशा ॥ ४ ॥

शब्द ७४
राम ज्यों राखे त्यों रहिये ॥ टेक ॥
जो प्रभु करे भला कर माने कबहु बुरा ना कहिये ॥ १ ॥
... सो सब सिरपर सहिये ॥ २ ॥
... होनी अनहोनी भी करदे ... गहिये ॥ ३ ॥

हमतो रहते राम भरोसे गुरु मिलन की आशा ॥४॥

शब्द ७४

राम ज्यों राखे त्यों रहिये ॥ टेक ॥

जो प्रभु करे भला कर माने कबहु बुरा ना कहिये ॥ १ ॥

हरि होनी अनहोनी भी करदे सो सब सिरपर सहिये ॥ २ ॥

कर कृपा निज नाम जपावे सो अन्तर ले गहिये ॥ ३ ॥

महरदास हरि हुकम माने यह सेवक को चहिये ॥ ४ ॥

शब्द ७५

प्रभु जी भले बुरे हम तेरे ॥ टेक ॥

पेट भरे पर महा आलसी सोवत सांझ सवेरे ।। १ ।।
तुम समदर्शी अधमउधारन चित्त न धरो अवगुण मेरे ।।
काम क्रोध और ममता तृष्णा रहत सदा नित घेरे ।। ३ ।।
तुम बिन कौन सहायक मेरो बैरी बहुत घनेरे ।। ३ ।।
माया बस यह जन्म गंवाया भटकत फिरे बहुतेरे ।। ५ ।।
गोपीनाथ आशा तज सबकी होऊ श्याम के चेरे ।। ६ ।।

ग़ज़ल ७६

श्याम की ऊधो छवि दिल में हमारे भा रही ।। टेक ।।

मुकुट सिर पर कान में कुण्डल गले बनमाल है ।
मुख में लगाई बाँसुरी अब याद हमको आ रही ।। १ ।।
... को मुरारी बास मथुरा में किया ।

श्याम की ऊधो छवि दिल में हमारे भा रही ॥ टेक ॥

मुकुट सिर पर कान में कुण्डल गले वनमाल है।
मुख में लगाई बाँसुरी अब याद हमको आ रही ॥ १ ॥
छोड़कर हम को मुरारी बास मथुरा में किया।
एक २ घड़ी हमें अब बरस बरस बिता रही ॥ २ ॥
फिर कभी आवेंगे गोकुल में दया करके हरी।
अंखियां हमारी रातदिन दरशनके लिये तरसा रही॥ ३ ॥
यह ज्ञान का उपदेश ऊधो और को बतलाइये।
ब्रह्मानन्द माधव की हमें अब प्रेम भक्ति सुहा रही ॥ ४ ॥

शब्द ७७

कोई पीवो राम रस प्यासा रे ॥ टेक ॥

गगन मण्डल में अमृत बरसे पीलो सांसम सासा रे ॥
ऐसा महंगा अभी बिकत है छै रत्ती बारह मासा रे ॥
जो पीवे सो जुग जुग जीवे कबहुं न होत विनाशा रे ॥
इस रस कारण हुए नृप जोगी छोड़े भोग बिलासा रे ॥
सहज सिंहासन बैठे रहते भस्म लगाय उदासा रे ॥
गोपीचन्द भरथरी रसिया अरु कबीर रहदासा रे ॥

गुरु दादूप्रसाद को कछुनके पाया सुन्दर दासा रे ॥

शब्द ७८

मानत यह आप रूप भगवान है ॥ टेक ॥

गुरु दादूप्रसाद को कछुनके पाया सुन्दर दासा रे ॥

शब्द ७८

जिसको तू नर तन मानत यह आप रूप भगवान है ॥ टेक ॥
अहंकार ने जब से घेरा कहन लगा मेरा और तेरा ।
भूल गया निज रूप अनेरा तू सर्वज्ञ सुजान है ॥ १ ॥
मैं हूं देह देह है मेरी केवल यही भूल है तेरी ।
पांच तत्त्व की यह तो ढेरी जान क्यों भयो अजान है ॥ २ ॥
बुरी भली करनी जब करै है बन्धन में तभी तो पड़े है ।

निष्क्रिय को नहीं कुछ डर है तोहे कर्म की आन है ॥ ३ ॥
सत् चित् आनन्द भाव संभारो पांच कोषते होजा न्यारो ।
नाम रूप कछु नांह निहारो यही तो निर्मल ज्ञान है ॥ ४ ॥

शब्द ७९

इतना तो करना स्वामी जब जान तन से निकले ।
गोविन्द नाम कह कर मेरे प्राण तन से निकले ॥ टेक ॥
श्री गंगा जी का तट हो या यमुनाजी का बट हो ।
और सांवरा निकट हो फिर प्राण तनसे निकले ॥ १ ॥

श्री वृन्दावन का स्थल हो मेरे मुख में तुलसीदल हो ।
विष्णु चरण का जलहो फिर प्राण तन से निकले ॥ २ ॥

श्री गंगा जी का ... तनसे निकले ॥ १ ॥
और सांवरा निकट हो फिर प्राण तनसे निकले

श्री वृन्दावन का स्थल हो मेरे मुख में तुलसीदल हो ।
विष्णु चरण का जलहो फिर प्राण तन से निकले ॥ २ ॥
सन्मुख सांवरा खड़ा हो बंशी का सुर भरा हो ।
तिरछा चरण धरा हो फिर प्राण तन से निकले ॥ ३ ॥
शिर सोहना मुकुट हो मुखड़े पै काली लट हो ।
यही ध्यान मेरे घट हो फिर प्राण तन से निकले ॥ ४ ॥
उस वक्त जल्दी आना ना क़ौल भूल जाना ।
नूपुर की धुनी सुनाना फिर प्राण तन से निकले ॥ ५ ॥

मेरे प्राण निकलें सुख से तेरा नाम निकले मुख से ।
बच जाऊं घोर दुख से फिर प्राण तन से निकले ॥६॥
जब कण्ठ प्राण आवे कोई रोग ना सतावे ।
तू दर्श यदी दिखावे फिर प्राण तन से निकले ॥ ७ ॥
यह नेक सी अर्ज़ है मानो तो क्या हरज है ।
कुछ तेरा भी फरज़ है फिर प्राण तन से निकले ॥ ८ ॥

प्रार्थना ८०

इतना तो करना स्वामी जब प्राण तन से निकले ।

श्री राम नाम लेकर मोरे प्राण तन से निकले ॥
सरयू नदी का चहिये सरसब्ज़ वो किनारा ।
लहरें हों झलमलाती बहती हो ठंडी धारा ॥

श्री राम नाम लेकर मोरे प्राण तन से निकले ॥
सरयू नदी का चहिये सरसब्ज़ वो किनारा ।
लहरें हों झलमलाती बहती हो ठंडी धारा ॥
एकान्त घाट सुन्दर तिस पर कुशा बिछाऊं ।
फिर न्हाके ठंडे जल से आसन मैं जमाऊं ॥
खिंच खिंच के नब्ज़ मेरी ऊपर को चढ़ती जावे ।
सुमरण में जीव मेरी हरगिज़ न पेच खावे ॥
मरणे के वक्त भगवन ज्यादा न तिलमिलाऊं ।

झांकी मुझे दिखाना जो अब तुम्हें बताऊं ॥
तर्कस बंधा हो पीछे कांधे धनुष हो लटका ।
कसकर बंधा हो तेरी नाजुक कमर पै पटका ॥
होठों में मुसुकराहट सिर पै मुकुट बंधा हो ।
हीरों में वह जड़ा हो तारों से वह मंढा हो ॥
गर्दन यह कट के मेरी तेरे चरण में पड़ी हो ।
आंखें खुली हों मेरी तेरी आँख से लड़ी हो ॥
इस नापाक मेरे तन को प्रभु हाथ न लगाना ।

चरणों की ठोकरों से सरयू में फेंक जाना ।
सरयू नदी की मछली भी इस तन को नोच खावे ।
दर्शन की आरजू है रघुवर की जै मनावे ॥

आंख खुली हो मेरी
इस नापाक मेरे तन को प्रभु हाथ न लगाना।

चरणों की ठोकरों से सरयू में फेंक जाना।
सरयू नदी की मछली भी इस तन को नोच खावे।
दर्शन की आरजू है रघुवर की जै मनावे॥

शब्द ८० (अ)

सुरता हे म्हारी धोवनियां म्हारा दाग़ जिगर का धोय॥टेर॥
तन कर कूंडी मति मसाला या ही में सांण धरो।
लोभ लकरिया ठोक जराओ कुन्दी तो खूब करो॥१॥
समता नीर ज्ञान का साबुन सत का मावा दो।

शील शिला परदे फटकारो या विधि साफ करो॥२॥
खैंच तान कर तह बनालो गुलझिट मत राखो।
जन्म जन्म के दाग़ लगे हैं अबके डालो याने धोय॥३॥

ग़ज़ल ८१

आलम में किस का डर है जिस पर नजर हो तेरी।
बेशक वह बेख़तर है जिस पर मेहर हो तेरी॥
दुश्मन न कोई उसका होवे तू दोस्त जिसका।
दुनियां ही यार होवे हां जब मदद हो तेरी॥

दरदो अलम वहाँ के ऐब वा गुनाह जहां के।
कोई न पास आवे जिसको पनाह हो तेरी॥
राई से कोह कर दे ख़ाली को दम में भरदे।

दुश्मन न कोई उसका ... हो तेरी ।।
दुनियां ही यार होवे हां जब मदद हो तेरी ।।

दरदो अलम वहाँ के ऐब वा गुनाह जहां के।
कोई न पास आवे जिसको पनाह हो तेरी ।।
राई से कोह कर दे खाली को दम में भरदे।
थोड़े से तू बहुत दे पर जब रज़ा हो तेरी ।।

शब्द ८२

गुरु के समान नाहीं दूसरा जहान में ।। टेक ।।
गुरु ब्रह्म रूप जानो शिव का स्वरूप जानो।
साक्षात विष्णु जानो लिखा है पुराण में ।। १ ।।

गुरू ज्ञान बतावे गुरु पाप से बचावे।
ब्रह्म से मिलावे गुरु तुर्या पद ध्यान में॥ २॥
यही श्रुति वेद कहता गुरु बिन ज्ञान कैसा।
ज्ञान बिना मुक्ति कैसी आवे तेरा ध्यान में॥ ३॥
छल कपट त्याग दीजो गुरु जी की सेवा कीजो।
सांवरा की शरणा लीजो खेलो ना मैदान में॥ ४॥

शब्द ८३

तेरा पिंजरा बना है अमोल निरख पिंजरे ने भाई॥ टेक॥

इस पिंजरे में तोता मैना सोऽहं सोऽहं बोलत बैना।
सुरत निरत को डाट शब्द में चितलाई॥ १॥

तेरा पिंजरा बना है अमोल निरख पिंजरे न भाई ॥टेक॥

इस पिंजरे में तोता मैना सोऽहं सोऽहं बोलत बैना।
सुरत निरत को डाट शब्द में चितलाई ॥१॥
पचों मार पचीसों वश में इन पांचों को करले रस में।
शून्य शिखर को खोज भरम तेरा मिटजाई॥२॥
खंब गड़े हैं बड़े रसीले बन्ध मत समझे इनको ढीले।
लगी पवन की गांठ खम्ब में उलझाई॥३॥
जो सत्गुरु की शरणा आवे मंगल मूल परम पद पावे।
हो तुर्या असवार मिटे आवा जाई॥४॥

शब्द ८४

जो कोई चितसे मोह ना विसारें मैं ना विसारूं प्रण है यही मेरा।।टेक।।
धर्म प्रिय हो धर्म बढ़ाऊं सफल कार्य कर अर्थ बताऊं।
मुक्ति चाहे तो पार लगाऊं पल क्षण मांही नालावों बेरा ।। १।।
रोग हरूं चिन्ता सब टारूं अभय करूं शत्रु को मारूं।
अचल भक्त जन वेग उबारूं सेवा करूं आप बन चेरा ।।२।।
मेरा नाम भक्त सुख दायक सदा विपत्ति में होत सहायक।
जो कोई रटे कृष्ण यदुनायक ताके हृदय करत नित डेरा ।। ३।।

गज़ल ८५

अरे लोगों तुम्हें क्या है या वह जाने या मैं जानूं ।। टेक।।

मेरा नाम भक्त सुख
जो कोई रटे कृष्ण यदुनायक ताके हृदय करत नित डेरा ॥ ३॥

गज़ल ८५

अरे लोगों तुम्हें क्या है या वह जाने या मैं जानूं ॥ टेक ॥
वह दिल माँगे तो हाज़िर है वह सर मांगे तो बेसर हूं।
जो मुख मोड़ूं तो काफिर हूं या वह जाने या मैं जानू ॥१॥
वह मेरी बग़ल छुप रहता मैं उसके नाज़ सभी सहता।
वह दो बातें मुझे कहता या वह जाने या मैं जानूं ॥ २॥
वह मेरे खून का प्यासा मैं उसके दर्द का मारा।
दोनों का पन्थ है न्यारा या वह जाने या मैं जानूं ॥ ३॥

मूवा आशिक द्वारे पर अगर वाक़िफ़ नहीं दिलबर।
अरे मुल्लाँ शिफारा पढ़ या वह जाने या मैं जानूं ॥४॥

शब्द ८६

मिलना कठिन है कैसे मिलूं पिया संग जाय ॥टेक॥
समझ सोच पग धरूं यतन से कर बहु भांति उपाय।
ऊंची सैल गैल रपटीली पाँव नहीं ठहराय॥ १ ॥
लोक अरु कुल की मर्यादा से बहुतक मन सकुचाय।
धाय मिलूं पिय से पीहर से तो अनरीत दिखाय ॥२॥
शून्य शिखर पर पिय को महल है श्वेत ध्वजा फहराय।
रूपी पिया बसत है वहां सुरत झकोरा खाय ॥३॥

लोक अरु कुल
धाय मिलूं पिय से पीहर से तो अनरीत दिखाय ॥ २ ॥

शून्य शिखर पर पिय को महल है श्वेत ध्वजा फहराय।
शब्द स्वरूपी पिया बसत है वहां सुरत झकोरा खाय ॥३॥
दूती सुमति आय धर्मिन को दीनों पिय ही मिलाय।
पिय ने पकड़ प्रेम से बैयां लीनी कण्ठ लगाय ॥ ४ ॥

शब्द ८७

बम बम्भोलेनाथ शिवनाथन के नाथ
आज मेरी कामना पूरण करो ॥ टेक ॥
मेरे बाबे की झोली में क्या क्या चीज़।

लौंग सुपारी धतूरा का बीज ॥ १ ॥
कोई बजावे शंख घड़ावल कोई बजावे ताल।
कोई मांगे खड़ा होकर गोदी में का खाल ॥ २ ॥
कोई चढ़ावे बेल पत्र कोई चढ़ावे भंग।
बैल की सवारी कीनी पारवती के संग ॥ ३ ॥

शब्द ८८

अनुभव स्वरूप निजरूप लखा जिन ओ३म्
सोऽहं रटा २ रे ॥ टेक ॥

अक्षय धन सम्पति मिल जावे तृष्णा कबहूं मन न डुलावे।
कर सन्तोष बैठ रहो घर में बाहर फिर मत उठा २ रे ॥ १ ॥

अक्षय धन सम्पति मिल जावे तृष्णा कबहूं मन न डुलावे।
कर सन्तोष बैठ रहो घर में बाहर फिर मत उठा २ रे ॥१॥
शान्त चित्त निर्मल बुद्धि होवे वृथा कल्पना मन की खोवे।
अन्तर बाहर उज्जवल करले मल बासा को छुटा २ रे ॥२॥
राग द्वेष के फंद कट जावें चहुं दिशि समता भाव दर्शावें।
निश्चय यही एक मन राखे जगसों दृष्टि हटा हटा रे ॥३॥
नाम रूप गुण लखे न जावें सत् चित आनन्द भ्रम नशावें।
माखन माखन खालो प्यारे छोड़ दो सब मठा मठा रे ॥४॥

ग़ज़ल ८६

शरण अपनी में रख लीजे दयामय दास हूं तेरा।
तुम्हें तज कर कहां जाऊं हितू को और है मेरा॥
भटकता हूं मैं मुद्दत से नहीं विश्राम पाता हूं।
दया की दृष्टि से देखो नहीं तो डूबता बेड़ा॥
सताया राग द्वेषों का तपाया तीन तापों का।
दुःखाया जन्म मृत्यु का हुवा तंग हाल है मेरा॥
दीन दुःख मेटने वाले तुम्हारा नाम सुनकर मैं।
शरण में आगिरा अबतो भरोसा नाथ है तेरा॥
क्षमा अपराध कर मेरे फक़त है आश अब तेरी।

शरण में आगिरा अबतो भरोसा नाथ है तेरा ॥
क्षमा अपराध कर मेरे फक़त है आश अब तेरी।
दया बलदेव पर करके बनाले नाथ निज चेरा ॥

शब्द ६०

सप्त सिद्धान्त कहे तुम सुनलो, एक ओं को करें बयान
हिरण्यगर्भ सिद्धान्त कहैं या, मात्रा तीनों कहैं बखान ॥
अग्नि वायु सूर्य तीसरा, ऋग्यजु साम यों ब्रह्म पिछान।
अकार उकार मकार ये अक्षर, नौ प्रतीक ओं भगवान् ॥

द्वितीय कपिल देव यूं कहते सत रज तम गुण तीन प्रधान।
व्यक्त अव्यक्त ज्ञेय ज्ञाता के यही तीन हैं सब में ज्ञान॥
मन बुद्धि अहंकार ये कारण नौ में धर ओं का ध्यान।
तीजे मुनि अवान्तर भाषैं अग्नि तीन का करें मिलान॥
ब्रह्मा विष्णु रुद्र ये तीनों हैं सब जग में देव महान।
धर्म अर्थ और काम प्रयोजन येही ओं के अक्षर मान॥
सनतकुमार कहैं चौथे भूत भविष्यत् ओ वर्तमान।
वही संध्याक्रान्तये संधि लिङ्ग स्त्री क्लीव पुमान॥

सप्तं ब्रह्मनिष्ठ हृदय को कण्ठ मूर्द्धा तीन स्थान।

शब्द ६१

सप्तं ब्रह्मनिष्ठ हृदय को कण्ठ मूर्द्धा तीन स्थान।

शब्द ६१

नाथ मेरी भली जो बनी असवारी॥टेक॥

अपयश ऊंट अकीरति हाथी पाप पालकी न्यारी।

संग असवार कुचील भील के काम कपट दल भारी॥१॥

काम क्रोध मद लोभ मोह ये हैं सरदार अगाड़ी।

कई ये सहस्र पापन के छकड़ा लाद चलेंगे पिछाड़ी॥२॥

मोसिर छत्र फिरे हंकार को भागी दया विचारी।

नेम धर्म मेरे निकट न आवे तज गये भूमि हज़ारी।। ३।।
मैं हूं सब पापिन को राजा कैसे आऊं शरण तिहारी।
सूर को स्वामी का बड़ा ही भरोसा तारनहारे मुरारी।।४।।

शब्द ६२

मधुकर कृष्ण कठोर भये।।टेक।।
लगे आषाढ़ गगन घन छाये चपला चमकत जोर।
झुमक झुमक बरसन लागे गरजत चारों ओर।
पपीहा पीउ पीउ नाम लये।।१।।

सावन मन भावन हम तज कर छाय रहे परदेश।
झूला [illegible]र नारि सब सहे न जात कलेश।।

झुमक झुमक बरसन लागे गरजत
पपीहा पीउ पीउ नाम लये ॥ १ ॥

सावन मन भावन हम तज कर छाय रहे परदेश।
झूला झूलत नारि सब सहे न जात कलेश॥
सखी सब गावत गीत नये॥ २॥
भादौं कारी यामिनी लखि डरपत जीउड़ा मोर।
झींगुर झनकारी करै दादुर कर रहे शोर॥
सुरत हरि हमरि भूल गये॥ ३॥
कुवार शरद निश जान के खंजन पहुंचे आन।
शीतल शशि लखि चांदनी भारत हरिरिपु वान॥

गये जब से ना दरस दये ॥ ४ ॥
कातिक व्रत धारे त्रिया गावत सब मिल ब्रन्द ।
हमको गृह भावत नहीं बिना श्री गोकुलचन्द ॥
स्याम मथुरा के बास लये ॥ ५ ॥
अगहन अनदेशो है बड़ो मग हेरत दिन जाय ।
भई सौति अब कूबरी लिये स्याम बिरमाय ॥
सकल सुख तीके भवन छये ॥ ६ ॥
पूष मास आया सखी लग्यो परन तुषार ।

कृष्ण मिलन बिन कंप रही हम सब ब्रज की नार ॥
श्याम सुख कुब्जै जाय दये ॥ ७ ॥

कृष्ण मिलन बिन कंप रही हम सब ब्रज की नार॥
श्याम सुख कुब्जै जाय दये॥७॥
मोहे मधुसूदन बिना परै नहीं है चैन।
नींद न आवे सेज पै देते रहत दुःख मैन॥
जाय चेरी के नाथ भये॥८॥
फागुन खेलत फाग सब रही रंग मिल डार।
हमको लागे तीर सम पिचकारी की धार॥
श्याम ऐसे में छोड़ गये॥९॥

चैत मास ऋतुराज लखि फूलन लगे पलाश।
जरद जरद द्रुम लता लखि उपजत उर में त्रास॥
बिरहा बिरहिन तन नित नये॥१०॥
लागत ही बैशाख अब घाम परत अति जोर।
कैसे शीतल होय उर बिन श्री नन्दकिशोर॥
सुनत ऊधो के होश गये॥११॥
जेठ लपट की झपट से है व्याकुल ब्रजबाल।
सूरश्याम राधा नगरी के सुमरत श्री नन्दलाल॥

चरणों में निशि दिन शीश नये॥१२॥

शब्द ६३

जेठ लपट की
सूरश्याम राधा नगरी के सुमरत श्री नन्दलाल ॥

चरणों में निशि दिन शीश नये ॥१२॥

शब्द ६३

जोगिया तू कब रे मिलेगो आई ॥

तेरे ही कारण जोग लियो है घर घर अलख जगाई ॥१॥
दिवस न भूख रैण नहीं निद्रा तुझ बिन कुछ न सुहाई ॥२॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर मिल कर तपत बुझाई ॥ ३ ॥

शब्द ६४

कैसे जीऊंरी मेरी माई, हरि बिन कैसे जिऊंरी ॥ टेक ॥

उदक दादुर मीनवत है जल से ही उपजाई।
पल एक जल कूं मीन बीसरै तड़फत मर जाई॥१॥
पिया बिन पीली भई रे बाला ज्यों काठ घुन खाई।
औषध मूल न संचरै रे वैदा फिर जाई॥२॥
उदासी होय बन बन फिरूं रे बिथा तन छाई।
दास मीरां लाल गिरधर मिल्या है सुखदाई॥३॥

शब्द ६५

बिर यो तो रंग गाढ़ा लगा मेरी माया दूजा नाहीं सुहाय॥टेक॥

पीया प्याला अमर रस का चढ़ गई घूप घुमाय।
यो तो अमल म्हारो कबहु न उतरे कोट करो न उपाय॥१॥

चिर यो तो रंग गाढ़ा लगा मेरी माया दूजा नाहीं सुहाय ।।टेक।।

पीया प्याला अमर रस का चढ़ गई घूप घुमाय ।
यो तो अमल म्हारो कबहु न उतरे कोट करो न उपाय ।।१।।
साँप टिपारो राणाजी भेज्यो द्यो मेड़तणी गल डार ।
हंस हंस मीरा कंठ लगायो यो तो म्हारे नौसर हार ।।२।।
विष को प्यालो राणाजी मेल्यो द्यो मेड़तणी ने प्याय ।
कर चरणामृत पी गई रे गुण गोविन्द रा गाय ।। ३ ।।
पीया प्याला नाम का रे और न रंग सुहाय ।
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर काचो रंग उड़ जाय ।। ४ ।।

शब्द ९६

नैना लोभी रे बहुरि सकै नहीं आय ॥ टेक
रोम रोम नख सिख सब निरखत ललच रहे ललचाय ॥
मैं ठाढ़ी गृह आपणे रे मोहन निरखत आय ।
सारंग ओट तजे कुछ अंकुस बदन दिये मुसकाय ॥ १ ॥
लोक कुटम्बी बरज बरज ही बतियां कहत बनाय ।
चंचल चपट अटक नहिं मानत पर हाथ गये बिकाय ॥२॥
भली कहो कोई बुरी कहो मैं सब लई सीस चढाय ।
मीराँ कहे प्रभु गिरधर के बिन पल भर रह्यो न जाय ॥३॥

शब्द ९७

भली कहो कोई बुरी कहो मैं सब लई सीस चढाय।

मीराँ कहे प्रभु गिरधर के बिन पल भर रह्यो न जाय ॥३॥

शब्द ६७

अच्छे मीठे चाख चाख बेर लाई भीलणी ॥ टेक ॥

ऐसी कहा आचारवती, रूप नहीं एक रती।
नीच कुल ओछी जात, अति ही कुचीलणी ॥ १ ॥

झूठे फल लीन्हे राम प्रेम की प्रतीत जाण।
ऊंच नीच जाने नहीं रस की रसीलणी ॥ २ ॥

ऐसी कहा वेद पढ़ी छिन में बिमान चढ़ी।

हरि जी सूं बांध्यो हेत बैकुण्ठ में झूलणी ॥ ३ ॥
ऐसी प्रीत करै कोई दास मीरां तरै जोई ।
पतित पावान प्रभु गोकुल अहीरणी ॥ ४ ॥

शब्द ६८

मेरे तो एक राम नाम दूसरा न कोई ।
दूसरा न कोई साधो सकल लोक जोई ॥ टेक ॥
भाई छोड़्या बन्धु छोड़्या सगा सोई ।
साध संग बैठ बैठ लोक लाज खोई ॥ १ ॥

भगत देख राजी हुई जगत देख रोई ।
प्रेम नीर सींच सींच प्रेम बेल धोई ॥ २ ॥

भाई छोड़्या बन्धु छोड़्या
साध संग बैठ बैठ लोक लाज खोई ।। १ ।।

भगत देख राजी हुई जगत देख रोई ।
प्रेम नीर सींच सींच प्रेम बेल बोई ।। २ ।।
दधि मथ घृत काढ़ लियो, डार दई छोई ।
राणा विष को प्यालो भेज्यो पीय मगन होई ।। ३ ।।
अब तो बात फैल पड़ी, जाणै सब कोई ।
मीरां राम लगन लगी होनी होय सो होई ।। ४ ।।

शब्द ६६

शिव शिव रटत मन आनन्द ।। टेक ।।

जाके सुमरत विघ्न विनशत, कटत यम को फन्द ॥ १ ॥
तीन नेत्र विशाल झलकत तिलक माथे चन्द ॥ २ ॥
ओढना बाघम्बरा शिव भणत छवि मकरन्द ।
भूत प्रेत विताल जंगम लिये फिरे शिव संग ॥ ३ ॥
वृषभ वाहन रुचि धतूरा भोगना विष भंग ।
पारवति पति शरण की गति सूर मन आनन्द ॥ ४ ॥

शब्द १००

रे भूले मन वृक्षों का मत लेरे ॥ टेक ॥

काटनिये से बैर नहीं है, सीचनियें से नहीं सनेह रे ॥ १ ॥
जो कोई वाके पत्थर मारे, वाहू को फल दे रे ॥ २ ॥

शब्द १००

रे भूले मन बूतों का मत लेरे ॥ टेक ॥

काटनिये से बैर नहीं है, सीचनियें से नहीं सनेह रे ॥ १ ॥
जो कोई वाके पत्थर मारे, वाहू को फल दे रे ॥ २ ॥
शीत घाम सब आपही ओटे, औरों को सुख दे रे ॥ ३ ॥
कहै कबीर शरण ले गुरुकी, भवसागर तीरण होरे ॥ ४ ॥

शब्द १०१

भज मन राम-चरण दिन राती ॥ टेक ॥
रसना कसना भजो तुम हरि पद, सुरमत क्यों अलसाती ॥१॥
जाके कहत दहत दुःख दारुण, सुनि त्रय ताप बुझाती ॥२॥

सुनते श्रवण सुजस रघुबरको सुन, जुड़ात हिय छाती ॥३॥
स्रोता सुमति सुशील सो, हरिजन देत सलाह सुहाती ॥४॥
रामचन्द्र को नाम अमीरस सो रस काहे न खाती ॥५॥
संवत सोलह सो इकतीसा, ज्येठ सुदी छठ स्वाती ॥६॥
तुलसीदास एक विनय लिखत है प्रथम अरज़की पाती ॥७॥

शब्द १०२

भज मन राम चरण सुख दाई ॥ टेक ॥
जेही चरणन से निकसी सुर सरी, शंकर जटा समाई ।

जटा शंकरी नाम परयो है त्रिभुवन तारन आई ॥ १ ॥
जेहि चरणन की चरण पादुका भरत रह्यो लव लाई ।

भज मन राम चरण सुख दाई ॥
जेही चरणन से निकसी सुर सरी, शंकर जटा समाई ।

जटा शंकरी नाम परयो है त्रिभुवन तारन आई ॥ १ ॥
जेहि चरणन की चरण पादुका भरत रह्यो लव लाई ।
सोई चरण केवट धो लीने तब हरि नाव चलाई ॥ २ ॥
सोई चरण सन्त जन सेवत सदा रहत सुखदाई ।
सोई चरण गौतम ऋषि नारी परस परम पद पाई ॥ ३ ॥
दण्डक वन प्रभु पावन कीन्हों ऋषियन त्रास मिटाई ।
सोई प्रभु त्रिलोक के स्वामी कनक मृगा संग धाई ॥ ४ ॥
ऋषि सुग्रीव बन्धु भय व्याकुल तिन जय छत्र धराई ।

रिपु को अनुज विभीषण निशिचर पर सत लंका पाई ॥५॥
शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक शेष सहस्र मुख गाई ।
तुलसीदास मारुत सुत की प्रभु निज मुख करत बड़ाई ॥६॥

भजन १०३

आये आये विदुर घर पावना जी ॥ टेक ॥
विदुर नहीं घर थी विदुरानी, आवत देखे शारंगपाणी ।
फूली अंगन आवे चिन्ता, भोजन कहा जिमावना ॥ १ ॥
केला एक प्रेम से लाई, गिरी गिरी सब देत गिराई ।
छिलका देत श्याम मुख मांहीं, लागे परम सुहावनाजी ॥२॥
इतने मांही विदुर जी आये, खोटे खारे वचन सुनाये ।

फूली अंगन आवे चिन्ती, भोजन
केला एक प्रेम से लाई, गिरी गिरी सब देत गिराई।

छिलका देत श्याम मुख मांहीं, लागे परम सुहावनाजी ॥२॥
इतने मांही विदुर जी आये, खोटे खारे वचन सुनाये।
छिलका देत श्याम मुख माहीं कहां गमाई भावना जी ॥ ३ ॥
केला विदुर लिये हाथों माहीं गिरीदेत गिरिधर मुख माहीं।
कहैं कृष्णजो सुनो विदुर जी, सो सवाद नहीं आवनाजी ॥४
बासी कूसे रूखे सूखे, हम हैं विदुर जी प्रेम के भूखे।
धन्य २ गोप ब्रज नारी, कृष्ण विदुर घर पावना जी ॥ ५ ॥

शब्द १०४

दोहा—धजा फड़के सुन्न में, बाजे अनहद तूर।
तकिया है मैदान में, पहुंचेगा कोई शूर॥

गगन मण्डल में जो जन जाकर सुने बेहद अनहद बानी।
सातों रंग निरखता यहां पर हो जावे पूरण ज्ञानी॥ टेक॥
श्याम पुतलियां बदल आंख की रूप रंग देखो सारे।
सप्त ऋषियों ने सात घाट पर भिन्न २ आसन मारे॥
जिस में थाना सहस्र कमल का तीन लोक तहां विस्तारे।
जनिता सविता देव सबन के इष्ट रूप सातों धारे॥

चूं चूं चैंकुला झाल समध की घंटा शंख बजे न्यारे।
भ्रम नि[illegible]न में धसि चल ज्योति जरैं नौलख तारे॥

चूं चूं चैंकुला झाल समध की घंटा शंख बजै न्यारे ।
धूम निहार गगन में धसि चल ज्योति जरैं नौलख तारे ॥
पांच कमल के बीच कुण्डलिनी सहज सहज ही फुंकारे ।
मेरु दण्ड से सीधा होकर तोड़ दिये नभ के तारे ॥
तीन लोक की रचना यहां से भई सुरति यहां दीवानी ।
सातों रंग निरखता० ॥ १ ॥
दर्शन यहां तिरलोक पति के पाओ मन में हर्षाओ ।
सूची अग्र छिद्र में होकर बंक नाल में घुस जाओ ॥

तिरछा मारग वंक नाल का बिन सत्गुरु कछु ना पाओ।
ऊंचा नीचा ऊंचा होकर त्रय मण्डल पर चढ़ जाओ॥
प्रत्याहार धारणा धारो सिमट बीच सुख मन पाओ।
पी पी पपीहा ऊपर बोल्यो कूर्म बन कर छुप जाओ॥
और मरे सब जग का मरना तुम जीते जी मर जावो।
भृंगी गुरु का शब्द सुनो तुम चरण गुरु के चित लावो॥
तन मन सौंपो अपना उनको हो जावो सर्वस्व दानी।
सातों रंग निरखता ० ॥ २॥

यह ब्रह्माण्ड फोड़ अण्डे से त्रिकुटी का मण्डल साजा।
योजन लक्ष लक्ष का घेरा सरे जीव का सब काजा॥

सातों रंग निरखता ० ॥ २ ॥

यह ब्रह्माण्ड फोड़ अण्डे से त्रिकुटी का मण्डल साजा।
योजन लक्ष लक्ष का घेरा सरे जीव का सब काजा॥
हास्य विलास यहां पर अद्भुत ओ३म् ओ३म् हूहू बाजा।
रस का उठें सरूर यहां पर अनहद का बादल गाजा॥
सहस्र भानु की ज्योति जगे यहां मदन देखकर ही लाजा।
ज्ञान विज्ञान हुए यहां से जब मोह जाल टूटा तागा॥
गंगा यमुना और सरस्वती इनके भीतर तू आजा।
अमृत रस में न्हाकर यहां पर विश्वनाथ दर्शन पाजा॥

योजन कोटि सुरत फिर जाकर दशों शून्य में मगनानी।
सातों रंग निरखता० ॥ ३ ॥

द्वादश गुण प्रकाश यहां का त्रिकुटी से शून्य में आई।
रूपवन्त देवों से मिलकर सिंधु सरोवर जा न्हाई ॥
महा शून्य की छवि को कोई कहो कैसे सके गाई।
मान सरोवर अमृत धारा आनन्द की नदियां पाई ॥
सारंगी सितार बजैं हैं बाजे श्रुति शब्द में ठहराई।
बसु मरुत वहां वास करें हैं कहा कहूं सुन्दरताई ॥

अग्नि चन्द्र समान मुखों से मंद मंद ही मुसकाई।
... सवन की ऐसी ही अबला पाई ॥
... वहाँ अमृत रस बरसे पानी।

सारंगी सितार बजें हैं बाजे
वसु मरुत वहां वास करें हैं कहां कहूं सुन्दरताई ।।

अग्नि चन्द्र समान मुखों से मंद मंद ही मुसकाई ।
आयु षोडश वर्ष सबन की ऐसी ही अबला पाई ।।
सूर्य कान्त की भूमि बनी वहाँ अमृत रस बरसे पानी ।
सातों रंग निरखता० ।।४।।
रिमझिम रिमझिम ज्योति झलके उठे प्रेम की लहर घनी ।
बाग़ बगीचे अमर फलों के लालों की वहां सड़क बनी ।।
अमी सरोवर बाग़ बाग़ में तट इन का पारस की मणी ।
कैसे शोभा कहें यहां की सब कुछ जाने आप धनी

स्वयं प्रकाश रूप को लेकर सुरती फिर आगे को चली।
योजन अरब गई ऊपर को आगे मिल गई प्रेम गली
दशों दिशा में घोर अन्धेरा मगन भई नहीं छली बली।
योजन खरब गई नीचे को यहां से देखी सैर भली॥
इस पद में दस नील अन्धेरा यहां से सुरती उलटानी।
सातों रंग निरखता० ॥ ५ ॥
योजन खरब गई नीचे को थाह वहां की नहीं पाई।
धर सतगुरु का ध्यान सुरतिया उलट गगन पर चढ़ि आई॥

महा शून्य से आगे आकर सिताऽसिता नदियां छाई।
मण्डल चारि पुरुष दर देखा भंवर गुफा झूली जाई॥
एक हिंडोला अद्भुत यहां पर झूल रहे मुनिवर राई।

महा शून्य से आगे आकर सिताऽसिता नदियां छाई ।
मण्डल चारि पुरुष दर देखा भंवर गुफा झूली जाई ॥
एक हिंडोला अद्भुत यहां पर झूल रहे मुनिवर राई ।
इड़ा पिंगला यहां पर अद्भुत सुषमन की पलटी लाई ॥
कुंडली लंगर जब खींचा पींग गगन झोका खाई ।
परा पश्यति और मध्यमा सखियों ने वाणी गाई ॥
अनहद घोर घटा बिन बरसे बंसी मधुरी मन मानी ।
सातों रंग निरखता० ॥ ६ ॥

गोपी मधुरी वाणी गावें बंसी बजावें नन्दकुमार।
एक एक गोपी संग मिलकर सोऽहं सोऽहं रहे उचार॥
हियरा से हियरा मिलि भेटे आनन्द को करें सुमार।
और देव की गम नहीं यहां पर महादेव लई मन में धार॥
गोपी बन कर मिले गले से चरणों से गलबैयां डार।
एक हो गये स्वयं रूप में नयनों से नयनों की धार॥
गंगा यमुना अचल होगई ऐसा अद्भुत किया विहार।
रुद्र साध्य मुनि एक होगये ताड़ी लागी अगम अपार॥

नाका टूटा सत्यलोक का उड़ गये हंसा सैलानी।
सातों रंग निरखता० ॥ ७॥

नाका टूटा सत्यलोक का उड़ गये हंसा सैलानी ।
सातों रंग निरखता० ।। ७ ।।
ज्योति हंस यहां वास करें है सूक्ष्म चैतन्य हो दर्शाया ।
जड़ स्थूल नहीं है वहां पर ना यहां पर काया माया ।।
प्रेम दिवानी भई यहाँ पर सत्य सत्य आपा पाया ।
हक हक धुनि सुनि के बीन की फिर आपे में मगनाया ।।
रूप स्वरूपा नदियां यहां पर सोना रूपा लै छाया ।
बन उपवन हैं यहां पै अद्भुत कोटि चार उनकी छाया ।

कोटिन सूर्य चांद समाना पहुप वृक्ष पर लगि आया।
परम हंस यहां बास करें हैं एक भुशुण्ड काग पाया॥
रस बस के सीकारे यहां पर हंस करें मधुरी बानी।
सातों रंग बिरखता॥ ८॥
सत्य पुरुष का दर्शन किया क्या बरणों सुन्दरताई।
कोटिन सूर्य चांद देख लो एक रोम से शरमाई।
षड त्रय लोक बराबर उनकी बिछी सेज सुख की पाई।
जाकर सोई पिया संग अपने सुध बुध अपनी बिसराई॥

सन्त कहैं अब अलख लोक की महिमा और उत्तमताई।
अरबन खरबन ज्योति चमकें कोटि शंख जो मलूकाई॥
क की गम नहीं मुझ को गंगे ने मिसरी खाई।

सन्त कहैं अब अलख लोक की महिमा और उत्तमताई ।
अरबन खरबन ज्योति चमकें कोटि शंख जो मलूकाई ।।
अगम लोक की गम नहीं मुझ को गूंगे ने मिसरी खाई ।
परमानन्द गुरु चरणों पर कोट कोट ही बलि जाई ।।
गुरु मिला आपा जब मेटा श्रुति शब्द मगनानी ।
सातों रंग निरखता ।। ६ ।।

होरी

सांवरे संग खेलो ना होरी, पुरुषोत्तम संग खेलो ना० ।।टेक।।

सास ननद दौरनियां जठनियां केते हि नाम धरो री।
समुझाई बरजी नहीं मानूं होनी होय सो होय री।
मेरो मन हरि से लगो री ॥ १ ॥
सुनियो री मेरी अगड़ परौसन कहो अब कैसे करो री।
बिन हरी फाग आग सी लागत तन मन जात जरो री।
प्राण नहीं मानत मोरी ॥ २ ॥
चलो सब हिल मिल कर बिनती करैं सीस नांए कर जोरी।
माने तो माने नहीं करैं बारा जोरी पकड़ेंगी नवल किशोरी।

ऐसो कहा सब से बड़ोरी ॥ ३ ॥
भक्ति की मांग प्रेम का सिन्दूरा सत की मंहदी रचोरी।

ऐसो कहा सब से बड़ोरी ॥ ३ ॥

भक्ति की मांग प्रेम का सिन्दूरा सत की मेंहदी रचोरी।
मन मन के कर माला करलो ज्ञान की गाति कसोरी।
ध्यान की ओट मिलोरी ॥ ४ ॥

नक बेसर चून्दर पहनाओ केसर रंग कर बोरी।
मल के गुलाल श्याम के मुख सूं निर्भय कहो होरी होरी।
तभी जीवन भलोरी ॥ ५ ॥

शब्द १०६

घट में कैसो फाग रचोरी ॥ टेक ॥
घन घन नौबत झड़ने लागी अनहद धुन टनकोरी ।
सोऽहं सोऽहं सोऽहं सोऽहं सोऽहं सोऽहं चहुं ओरी ।
शुन्य में शोर पड़ोरी ॥ १ ॥
बाजत बीन मृदंग मुरलिया शंख झांझ ढप घोरी ।
सुरत निरत से पिया को रिझावत नयनन में चोरी ।
मोहिनी मन्त्र पढोरी ॥ २ ॥
उत सूं पिया इत सूं मैं धाई केसर रंग भर झोरी ।

ज्ञान का रंग ध्यान सूं छिड़ को तार २ देयि बोरी ।
पाग पिया चून्दर मोरी ॥ ३ ॥
झट पट बैयां डार गले में मुख चूंबत बारा जोरी ।

उत सूं पिया इत सूं मैं धाई केसर रंग भर झोरी ।

ज्ञान का रंग ध्यान सूं छिड़ को तार २ देयि बोरी ।
पाग पिया चून्दर मोरी ॥ ३ ॥
झट पट बैयां डार गले में मुख चूंबत बारा जोरी ।
निर्भय लिपट चिपट पिया संग सो रहो रयन रही थोरी ।
होने दो ऐसी होरी ॥ ४ ॥

शब्द १०७

टेक—जिधर देखता हूं उधर तू ही तू है,
कि हर शै में जलवा तेरा हू बहू है ।

चमन में सरू पर यह कहती है कुमरी
तुही तू तुही तू तुही तू तुही है ॥१॥
गुलिस्तां में गुल पर यही कहती बुलबुल
तुही तू तुही तू तुही एक तू है ॥२॥
मैं सुनता हूं हर वक्त तेरी कहानी
कि तेरा ज़िकर हो रहा कू बकू है ॥३॥
बिना जिसके माबूद औरों को बोलो
जुबां को संभालो यह क्या गुफ्तगू है ॥४॥

ग़ज़ल १०८

कांटे से भी ख़राब है जिस गुल में बू न हो।
वीराने की मिसाल है जिस दिल में तू न हो॥

बिना जिसके माबूद औरों को बोलो
ज़बां को संभालो यह क्या गुफ्तगू है ॥ ४ ॥

ग़ज़ल १०८

काँटे से भी ख़राब है जिस गुल में बू न हो।
वीराने की मिसाल है जिस दिल में तू न हो ॥
गूंगी ज़बां हो जिस पै तेरी गुफ्तगू न हो।
जल जाय दिल वह जिस में तेरी जुस्तजू न हो ॥
जो स्याह दिल सताये किसी बे जबां को।
मालिक के रू बरू वह कभी सुरख़रू न हो ॥

दुनियां से हाथ धोके करले वे ज़बां पै प्यार ।
हर हाल में है पाक उसे हाजत वज़ू न हो ॥
इन्सां है वह जो आप सा जाने जिहां को ।
तफ़रीक जिस के दिल में कभी मैं व तू न हो ॥
खोले हुये हूं हाथ जहां से हमारा कूंच ।
लिपटी हुई कफ़न में कोई आरज़ू न हो ॥
मख़मूर है शराब सुलह कुल का जाम पी ।
इस राम के हबीब का ख़ाली सुबू न हो ॥

शब्द १०६

[illegible] रे जिसने सत् गुरु वैद्य न जाना ॥ टेक ॥
[illegible] लग्यो है तृष्णा रूपी खांसी ।

मख़मूर है शराब सुलह कुल का जाम पी ।
इस राम के हबीब का ख़ाली सुबु न हो ।।

शब्द १०६

सब जग रोगिया रे जिसने सत् गुरु वैद्य न जाना ।। टेक ।।
जन्म मरण को रोग लग्यो है तृष्णा रूपी खांसी ।
आवागमन की डोर गले बिच पड़ी काल की फांसी ।। १ ।।
सच्चा गुरु कोई ना पूजे झूठा जग पतियावे ।
अन्धे बांह गही अन्धे की मारग कौन बतावे ।। २ ।।
सतगुरु शब्द संजीवन बूटी जो घिस अंग लगावे ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो बहुर जन्म नहीं आवे ।। ३ ।।

शब्द ११०

दाता एक राम भिखारी सारी दुनियां ॥टेक॥
राजा चढे रण घन दुर्जन धुनियां।
समर समूह पै दोऊ ओर सुर मुनियां ॥१॥
चोर चले चोरी करण ठग ठान ठनियां।
साहूकार रोकड़ बांधे लाद चले बनियां ॥२॥
जोगी जती जोग सांधे जपैं माला मनियां।
अंजली पसार मांगे बडै ज्ञानी गुनियां ॥३॥

कोई नाचे गावे कोई तोड़े तान तनियां।
ऐसे भीषण दास उन मुनियां ॥४॥

शब्द १११

अंजली पसार मांगे बढ़े ज्ञानी गुनियां ॥ ३ ॥

कोई नाचे गावे कोई तोड़े तान तनियां।
भजन भरोसे भीषण दास उन मुनियां ॥ ४ ॥

शब्द १११

कैसे आयो मेरी बाखर में बतादे कान्हा मोय ॥ टेक ॥
मैं तो अपने चौबारे में रही पलंग पर सोय।
बांह पकड़ तैंने आन जगाई तेरी अकल गई कहां खोय ॥ १ ॥
भज जा कान्हा घर अपने को मैं समझाऊं तोय।
जो मेरा बलमा जाग उठैगा खूब लराई होय ॥ २ ॥

बड़े घरन की राज दुलारी क्या समझे है मोय।
तेरी जात अहीरा कान्हा जानत हैं सब कोय ॥ ३॥
यह बातैं मथुरा में कान्हा देऊं कंस से पोय।
भरी कचहरी पकड़ मंगावै तेरी माय मरेगी रोय ॥ ४॥

शब्द ११२

खेल खिलैया प्यारो कृष्ण उछैया ॥ टेक ॥
बन हि बसन्ती बाग़ बसन्ती, फूल बसन्ती सुगन्ध फलैया॥१॥
फूलन गहना जरत बसन्ती पहरत राधा कृष्ण कन्हैया ॥ २॥

करत किलोल परस्पर हिल मिल नाचत भोर बसन्त खिलैया।३।
धरणी धर आप ही खेले आप खिलैया ॥ ४॥

बन हि बसन्ती बाग़ बसन्ती, फूल बसन्ती
फूलन गहना जरत बसन्ती पहरत राधा कृष्ण कन्हैया ॥२॥

करत किलोल परस्पर हिल मिल नाचत भोर बसन्त खिलैया।३।
ब्रह्मा रचत शेष धरणी धर आप ही खेले आप खिलैया ॥४॥
बैजू दास गोविन्द गुण गावत श्याम सुन्दर प्रभु लेत बलैया।५।

शब्द ११३

धर्म मत हारो रे जग में जिन्दगी दिन चार ॥टेक॥
अगम लोक से चल कर आया, पल्ले खर्ची कुछ नहीं लाया।
यहां आकर गढ़ कोट चिनाया यौंही जाता संसार ॥१॥
धर्मराज के जाना होगा, सारा हाल सुनाना होगा।

फिर पाछे पछताना होगा, कर लो ना सोच विचार ॥ २ ॥
अब तो चेत करो मेरे भाई, तैंने वृथा उमर गंवाई ।
तैं धोके काया लुटवाई, भज राम नाम है सार ॥ ३ ॥
बार बार सतगुरु समझावे, मिनखा जन्म बहुर नहीं पावे ।
गया वक्त फिर हाथ न आवे, श्री स्वामी जी कहैं हर बार ॥४॥

शब्द ११४

गुरवा संग मेला है सुनियो सन्त सुजान ॥ टेक ॥
प्रेम नगर की औघट घाटी, निर्भय पन्थ दुहेला है ॥ १ ॥
लोक लाज कुल की मर्यादा, शीश दिया सो चेला है ॥ २ ॥
उलटी पवन शिखर धन लागी, धर रहा ध्यान अकेला है ॥ ३ ॥

प्रेम नगर की औघट घाटी, निर्भय पन्थ दुहेला है ॥१॥

लोक लाज कुल की मर्यादा, शीश दिया सो चेला है ॥२॥
उलटी पवन शिखर धुन लागी, धर रहा ध्यान अकेला है ॥३॥
पाप पुण्य से न्यारा रहता, सत्गुरु आप नहेला है ॥४॥
घीसा सन्त कहै सुन साधो, बाहर भीतर खेला है ॥५॥

शब्द ११५

सजन घर चलो सुहाग भरी ॥ टेक ॥
शब्द की डुलिया पांच कहार, चरण धरो हे विचार विचार॥१॥
पांच मवासी थोड़े असवार, ज्ञान खड्ग ले होले हुशियार ॥२॥

इस मक्के की छोड़ दे रीत, पार ब्रह्म से जोड़ो प्रीत ॥३॥
कहै कबीर जागे उनके भाग, मिलगये सत्गुरु दिया है सुहाग ॥

शब्द ११६

मेरो हरि बिन कौन सहाई ॥ टेक॥
काकी मात पिता सुत बनिता, को काहू को भाई ॥१॥
धन धरनी अरु सम्पति सगरी, जो मानिऊ अपनाई ॥२॥
तन छूटे कछु संग न चाले, कहा ताहें लिपटाई ॥३॥
दीन दयाल सदा दुख भञ्जन, तासिऊ रुचि न बढ़ाई ॥४॥

नानक कहत जगत सब मिथ्या, ज्यों सुपनों रह नाहीं ॥५॥

शब्द ११७

हरि ना भजें तिनके मुख कारे ॥ टेक ॥

दीन दयाल सदा दुख भञ्जन, तासेऊ रुचि न बढ़ाई ॥४॥

नानक कहत जगत सब मिथ्या, ज्यों सुपनों रह नाहीं ॥५॥

शब्द ११७

हरि ना भजें तिनके मुख कारे ॥ टेक ॥
अमृत को छोड़ विषय रस पीवत, राम नाम क्यों लागत खारे ॥१॥
साधूसंग मन नहीं भावे, खल नीच संग करत प्यारे ॥२॥
भगवत् गीता सुनी नहीं श्रवण सों, नर घोर नरक में जारे ॥३॥
तुलसी दास ऐसे पतित के, जम के दूत रहते रखवारे ॥४॥

शब्द ११८

जो जन ऊधो मोह ना विसारे, वाहिना विसारूं छिन घड़ी रे टेक॥

जो मोहे भजे भजूं में वाको, सुख राखूं आनन्द घड़ी रे ॥ १ ॥
जन्म जन्म के फन्दे काटूं, दे डारूं बैकुण्ठ पुरी रे ॥ २ ॥
दुर्वासा अम्बरीष घर आये, चक्र सुदर्शन रक्षा करी रे ॥ ३ ॥
भारत में भंवरी के अण्डे, राख लिये गज घन्ट धरी रे ॥ ४ ॥
ध्रुव प्रहलाद रैन दिन ध्याये, गुप्त हुए तैं प्रगट करीरे ॥५॥
भरी सभा में द्रुपद सुता को, चीर दिये जगदीश हरीरे ॥६॥
खम्भ फोड़ हिरणाकुश मारचो, भक्त प्रहलाद की रक्षा करीरे॥७॥
सूरदास गजराज उबारचो, जगन्नाथ जगदीश हरी रे ॥८॥

होली ११६

चलो नन्दलाल के संग में सकल होरी मचावेंगी ।
किसी विधि साथ छल बल कर पकड़ उसको बुलावेंगी ॥टेक॥

खम्भ फोड़ हिरणाकुश मारचो, भक्त प्रह्लाद की रक्षा करी...
सूरदास गजराज उबारचो, जगन्नाथ जगदीश हरी रे ॥८॥

होली ११९

चलो नन्दलाल के संग में सकल होरी मचावेंगी ।
किसी विधि साथ छल बल कर पकड़ उसको बुलावेंगी ॥टेक॥
चलो सब साज आभूषण, कनक पिचकारी लेले कर ।
चपल घनश्याम के ऊपर, सकल जल्दी से धावेंगी ॥ १ ॥
छबीले लाल को आली, पकड़ जिस वक्त पावेंगी ।
उठाकर केशरी सारी, नई नारी बनावेंगी ॥ २ ॥
हमें जैसा नचाया है, उन्हें भी हम नचावेंगी ।

पकड़ उस वक्त छोड़ेंगी, कि जब हा हा करावेंगी ॥ ३ ॥
फुवारें रंग केसर की सकल हिल मिल उठावेंगी।
उन्हें हम बोर कर रंग में, यशोदा ढिग ले जावेंगी। ॥ ४ ॥
यशोदा देख छवि बांकी, बड़ा आनन्द मानेंगी।
बहुत सत्कार से हम को, हंस हंस के बुलावेंगी ॥ ५ ॥
उठी कह कर सकल गोपी, यह अवसर फिर न पावेंगी।
शर्मा रस भरी होरी निशि दिन खूब पावेंगी ॥ ६ ॥

शब्द १२०

हम ना किसी के कोई ना हमारा, झूंठा है सब जगत विहारा ॥टेक॥
तन सम्बन्ध सकल परिवारी, सो तन हमने जाना न्यारा ॥
पुण्य उदय सुख का बढ़वारा, पाप उदय दुःख होत अपारा।

शर्मा रस भरी होरी निशि दिन खूब पावेंगी ॥ ६ ॥

शब्द १२०

हम ना किसी के कोई ना हमारा, झूंठा है सब जगत विहारा ॥टेक॥
तन सम्बन्ध सकल परिवारी, सो तन हमने जाना न्यारा ॥
पुण्य उदय सुख का बढ़वारा, पाप उदय दुःख होत अपारा ।
पाप पुण्य दोऊ संसारा, मैं सब देखन जानन हारा ॥
मैं तिहूं जग तिहूं काल अकेला, पर संयोग भयो बहु मेला ।
स्तुति निन्दा सब कर कर जाहीं, मेरे हर्ष शोक कछु नाहीं ॥
राग भाव ते सज्जन मानों, दोष भाव ते दुर्जन जानों ।
राग द्वेष दोऊ मम नाहीं, दया न तम लोचन पद माहीं ॥

शब्द १२१

काहे सोच करे नर मन में वह तेरा रखवारा है ॥टेक॥
गर्भ वास से जब तू निकला, दूध कुचन में डारा है रे।
बालापन में पालन कीनों, माता मोह दुवारा है रे। १॥
अन्न रचा मनुजों के कारण, पशुवों के हित चारा है रे।
पक्षी बन में पान फूल फल, सुख से करत अहारा है रे॥२॥
जल में जलचर रहत निरन्तर, खावे मांस करारा है रे।
नाग बसें भूतल के माहीं, जीवत वर्ष हज़ारां है रे॥३॥

स्वर्ग लोक में देवन के हित, बहत सुधा की धारा है रे।
ब्रह्मानन्द फिर सब तज कर, सुमरो सिर्जन हारा है रे॥४॥

जल में जलचर रहत निरन्तर, खावें मांस करारा है रे।
नाग बसें भूतल के मांहीं, जीवत वर्ष हज़ारां है रे ॥ ३ ॥

स्वर्ग लोक में देवन के हित, बहत सुधा की धारा है रे।
ब्रह्मानन्द फिर सब तज कर, सुमरो सिर्जन हारा है रे ॥ ४ ॥

शब्द १२२

मन लागा राम फ़क़ीरी में ॥ टेक ॥
जो सुख पाया नाम भजन में, सो सुख नाहिं अमीरी में ॥ १ ॥
भला बुरा सब का सुन लीजे, कर गुजरान ग़रीबी में ॥ २ ॥
हाथ में कुण्डी बग़ल में सोटा, चारों कूंट जगीरी में ॥ ३ ॥
आखिर यह तन खाक मिलेगा, कहां फिरत मग़रूरी में ॥ ४ ॥

कहैं कबीर सुनो भाई साधो, साहिब मिले सबूरी में ॥ ५ ॥

शब्द १२३

हरि सों लाग रहो मेरा भाई, तेरी बिगड़ी बात बन जाई ॥टेक॥
ऐसा भजन करो घट भीतर, छोड़ कपट चतुराई।
सेवा बन्दगी और आधीनता, सहज मिलैं रघुराई ॥ १ ॥
दुनियां दौलत माल ख़ज़ाना, बनियां बलै चलाई।
एक बात मोय लागे असम्भव, खोज ख़बर नहीं पाई ॥ २ ॥
स्याही गई सफेदी आई, अब क्या करि हो भाई।

राम नाम सुमरण नहीं कीनों, बिरथा जन्म गंवाई ॥ ३ ॥
ध्रुव प्रह्लाद नाम से तर गये, तर गये सजन कसाई।

एक बात मोय लागे असम्भव, खोज खबर नहीं पाई ।।२।।
स्याही गई सफेदी आई, अब क्या करि हो भाई ।

राम नाम सुमरण नहीं कीनों, बिरथा जन्म गंवाई ।। ३ ।।
ध्रुव प्रह्लाद नाम से तर गये, तर गये सजन कसाई ।
हरि की सर बर कौन करैगो, नानक बात बताई ।। ४ ।।

शब्द १२४

रघुवर कौशल्या के लाल मुनि की यज्ञ रचाने वाले ।। टेक ।।
पहुंचे जनकपुरी दरम्यान, तोड़ा सब राजन का मान ।
उन्होंने नहीं किया अभिमान, शिव के धुनुष तोड़ने वाले ।।१।।
सीता ब्याही आई रणवास, मात केकई भई उदास ।

दिया बारह बरस बनवास, अहल्या नार उधारन वाले ॥ २ ॥
जा बान्धा सिन्धु का सेत, सुवरन लंका करदी खेत ।
लंका भगत विभीषण हेत, जल पर शिला तिराने वाले ॥ ३ ॥
बेड़ा आन पड़ा मंझधार, तुम बिन कौन लगावे पार ।
तुम तो हो गये खेवन हार, मेरी धीर धराने वाले ॥ ४ ॥

शब्द १२५

धीरे चलो तुम गोप लली री ॥ टेक ॥
नूपुर धुनि जो सुन पावेगा, घेरेगा फिर आय गली री ॥ १ ॥

घर को झाड़ कठिन सों सुरझत, हम अबला वह पुरुष बली री ॥ २ ॥
नारायण नित दांव घात में, लग्यो रहत वह छैल छली री ॥ ३ ॥

धीरे चलो तुम गोप ललीरी ।।टेक।।
नूपुर धुनि जो सुन पावेगा, घेरेगा फिर आय गलीरी ।। १ ।।

डर झों झाड़ कठिन सों सुरझत, हम अबला वह पुरुष बलीरी ।।२।।
नारायण नित दांव घात में, लग्यो रहत वह छैल छलीरी ।।३।।

शब्द १२६

दयानिधि तेरी गति लखी ना पड़े ।।टेक।।
पिता वचन टारे सोई पापी सो प्रहलाद करे ।
ताहि उधारन को श्री रघुवर नर सिंह रूप धरे ।। १ ।।
एक गऊ जो देत विप्र को सो सुर लोक तरे ।
राजा नृग कोटिन गऊ दीनीं सो काहे कूप परे ।। २ ।।

अकरम कर्म, कर्म सोई अकरम अकरम कर्म करे।
हिरण्याक्ष दश कंध विरोधी कुटुम्ब सहित उधारे॥ ३॥
बेद पुराण जोई जस गावें तिस बल यज्ञ करे।
ताहि पकड़ पाताल पठायो कैसे सूर तरे॥ ४॥

शब्द १२७

चल मन सन्त समागम कीजे॥ टेक॥
हित को बोल सुनत नहीं एक हु, जीवन पल पल छीजे।
जब यम दूत पकड़ ले जहैं, मुझको दोष न दीजे॥ १॥

हरि चर्चा जब करिहै सुनिहै, पत्थर होय पसीजे।
छूटत सकल प्रबल मल मूरख, प्रेम रंग अति भीजे॥ २॥

हरि चर्चा जब करिहै सुनिहै, पत्थर होय पसीजे।
छूटत सकल प्रबल मल मूरख, प्रेम रंग अति भीजे॥ २॥
राम चरित्र सुधा को सागर, श्रवणन कर भर लीजे।
परमानन्द प्रकट होय त्यूं त्यूं, ज्यूं ज्यूं रतीसूं पीजे॥ ३॥
या माया ने छान बीन कर, राव रंक मीझे।
तासों निर्भय जब ही हुई है, श्याम सुन्दर जब रीझे॥ ४॥

शब्द १२८

श्याम की ऊधो जुदाई अब सही जाती नहीं।

न दिन को चैन रात को आखों में नींद आती नहीं ॥ १ ॥
बेवफा हम से ख़फा हो, जा दिया सौतन को दिल ।
क्या ख़ता मेरी ख़बर, भेजी कोई पाती नहीं ॥ २ ॥
दिल दिया ग़ैरों को हर दम, ग़म दिया हम को सनम ।
अब तो कोई मिलने की सूरत, हम को दिखलाती नहीं ॥ ३ ॥
माखन व मिसरी छोड़ कर, वह गये पीने को छाछ ।
ताब जुगनू कभी महताब को, पाती नहीं ॥ ४ ॥
उनकी उलफत में हमेशा, गोपियां गाती थीं राग ।

वह गये हैं जब से कहीं, गातीं हैं पर भातीं नहीं ॥ ५ ॥

उनकी उलफत में हमेशा, गोपियां गाती थीं राग ।

वह गये हैं जब से कहीं, गातीं हैं पर भातीं नहीं ॥ ५ ॥
कान में कुण्डल गले सेली, मेलैं तन पै भभूत ।
होंवें हम जोगनियां उन्हें, कहते शरम आती नहीं ॥ ६ ॥
मार कर आसन ले माला, करैं कुंजन में भजन ।
यह सुखन लिखते ज़रा, तबीयत तरस खाती नहीं ॥ ७ ॥

शब्द १२६

नरायण मैं शरण तिहारी दया करो महाराज ॥ टेक ॥
मात तात सुत दार सहोदर, कोई न आवत काज ॥१॥

भवसागर जल दुस्तर भारी, तुमरे चरण जिहाज़ ॥ २ ॥
पाप अनेक किये जग मांही, तुमको है अब लाज ॥ ३ ॥
ब्रह्मानन्द दया तुमरी से, सब दुःख जावत भाज ॥ ४ ॥

शब्द १३०

पीयोरे जिन राम नाम रस पीयो ।
योग यज्ञ आचार नेम ब्रत, जप तप सब कर लीयो ॥टेक॥
राम नाम मीठो ऐसो मीठो नाहीं और काऊ,
जाको स्वाद चख्यो शिव नारद मुनि दोऊ ।

ब्रह्माने पीयो जा ने रचदिये तीनों लोक,
शिव जी ने पीयो तीनो लोकन की झेली झोक ॥

जाको स्वाद चख्यो शिव नारद मुनि दोऊ।

ब्रह्माने पीयो जा ने रचदिये तीनों लोक,
शिव जी ने पीयो तीनो लोकन की झेली झोक ॥
सहस्र अठासी पीयो ठाडे भये कर ओक ॥
वालमीक कथ दीयो ॥ १ ॥
ध्रूजी ने पीयो वाकी उमर वर्ष पांच,
पीयो है प्रहलाद ताते खम्ब की न लागी आंच।
काग भुशुण्ड जी ने गरुड़ जी ने पीयो फेर,
याज्ञवल्क्य भरद्वाज जी ने दिया है निघेड़ ॥

तुलसीदास ने पियो सन्तन की पायो टेर,
सूर आचमन कीयो ॥ २ ॥
अहल्या ने पीयो रामचन्द्र ने छुवाई लात,
भीलनी ने पीयो ताके घर गये दोऊ भ्रात।
कर्मा बाई पीयो ताको खीचडो है बासी खात ॥
पीयो है कबीरजी ने निर्गुण ब्रह्म भये,
गनका ने पीयो वाने सूवाने पढ़ाय लीयो ।
पीयो हरि दास वाके भवन भगवान गये ॥

कीपी ने चख लियो ॥ ३ ॥
राम नाम ऐसो है जी जैसो जाके हाथ पड़्यो,
कोई नर पी पी के अमर पर पग धर्यो ।

पीयो हरि दास वाके भवन भगवान गये ॥

बीपी ने चख लियो ॥ ३ ॥
राम नाम ऐसो है जी जैसो जाके हाथ पड़्यो,
सोई नर पी पी के अमर पुर पग धरयो ।
जन्म गमायो जाने पीवे को न मन करयो,
पृथ्वी राज पीयो वाके दस हज़ार कान भयो ।
अगस्त मुनि जी ने जिह्वा से स्वाद कियो,
तासे थोड़ी मेरे हाथ पड़्यो जी ॥
हेजी पाती राम को भीयो ॥ ४ ॥

शब्द १३१

आधीन होकर बुरा है जीना, है मरना अच्छा सवतन्त्र होकर ।
सरलको तजकर गरलसे प्याला, है मरना अच्छा स्वतन्त्रहोकर॥१॥
पड़ी हो हाथों में हथकड़ी यदि, तो स्वर्ग के सुख से लाभ क्या है।
नरकके दुःखमें निवास निशिदिन, है करना अच्छा स्वतन्त्रहोकर॥२
जो दास होकर मिलें भवन में, सुस्वादु भोजन तो तुच्छ है वह।
सदैव उपवास करके बन बन, विचरना अच्छाहै स्वतन्त्र होकर॥३॥
मिले उपाधी या मान पदवी, जो सेवा करके व्यर्थ हैं सब ।
घृणा के गड्ढे में होके व्याकुल, उतरना अच्छा स्वतन्त्र होकर ॥४॥

शब्द १३२

सोचूं क्यों करना भाई जो करसी करतार ॥ टेक ॥

सदैव उपवास करके वन वन, विचरना अच्छा है स्वतन्त्र होकर ॥३॥
मिले उपाधी या मान पदवी, जो सेवा करके व्यर्थ हैं सब ।

घृणा के गड्ढे में होके व्याकुल, उतरना अच्छा स्वतन्त्र होकर ॥४॥

शब्द १३२

सोच्यां क्यों करना भाई जो करसी करतार ॥ टेक ॥
सोच्यां सोच न हो वही जो सोचे लख बार ॥
चुप्या चुप्य न हो वही जो लाये रहां लव तार ॥
भुख्यां भुक्ख न उतरि जो बन्ने परियां पार ॥
किव सुचियारा हो वही क्यों पुड़े तुट्टे पाल ॥
हुकम रज़ाई चल्लना गुरु नानक लिखियां नाल ॥

शब्द १३३

सुत्तां ऐत्ते जाग बंदिया तेरा नाम जपन दा बेला ॥टेक॥
उचियां पार वे अन्त स्वामी कौन जाने गुण तेरे ।
गावत उदरे सुनते भी उदरे बिनसे पाप घनेरे ॥
पशु परे तुम मुग्ध को तारें पापें न पार उतारे ।
नानक दास तेरी शरणाई सदा सदा बलिहारे ॥

शब्द १३४

सच्चा सतगुरु मिले तो चेला पलट के कीड़े से भृंग होकर ।

समाया अपने में आप फिर में, मिसाले जलकी तरंग होकर ॥१॥
इड़ा पिंगला सुषम्ना, तीनों नाड़ी के सङ्ग होकर ।

सच्चा सतगुरु मिले तो चेला पलट के कीड़े से भृंग होकर ।

समाया अपने में आप फिर में, मिसाले जलकी तरंग होकर ॥१॥
इड़ा पिंगला सुषम्ना, तीनों नाड़ी के सङ्ग होकर ।
हमेशा बहती है यह त्रिवेणी, हमारी भृकुटी में गंग होकर ॥२॥
यह दिल को धोया मैं खूब मलमल मिसाले दर्पण के रंग होकर ।
दुई दूर कर हुवा मैं इकता, दुरङ्ग से फिर इकरङ्ग होकर ॥३॥
रूप सच्चिदानन्द है मेरा, कहा जबां से सोऽहं होकर ।
समाया अपने में आप फिरमें, मिसाले जलकी तरङ्ग होकर ॥४॥
दिल कायर के कतर लिये पर, हुवा वह बेपर अपंग होकर ।

क्या मजाल है उड़ान भरले, हमारा दिल यह मतंग होकर ॥५॥
ज्ञान का अंकुश लगाया हमने, हमेशा सन्तों के संग होकर।
बिन सत्संगति कोई न सुधरे, कुसङ्ग छोड़ा सुसङ्ग होकर ॥६॥
नाभि कमल से गया मैं सीधा, बङ्क नाल की सुरंग होकर।
शून्यशिखर में सोया मैं सुखसे, जन्म मरण से निसङ्ग होकर ॥७॥
क्या मजाल है वहां काल की, जो देखे मुझे बदरंग होकर।
योगी जुगत जो जीवे हमेशा, युगानयुग उस प्रसंग होकर ॥८॥
सूरज गिरि कहैं सन्यासी से, अड़ै कोई कुफ़रा मलंग होकर।

तो खूब ठहरे बराबरी की सभा में शब्दों से जंग होकर ॥९॥
संसारी नहीं अड़ै सन्त से, अड़ै कोई नंगा निहंग होकर ॥

योगी जुगत जो जावे हमेशा, युगानयुग
सूरज गिरि कहैं सन्यासी से, अड़ै कोई कुफ़रा मलंग होकर।

तो खूब ठहरे बराबरी की सभा में शब्दों से जंग होकर ॥६॥
संसारी नहीं अड़ै सन्त से, अड़ै कोई नंगा निहंग होकर ॥
आखिर को फिर जले ज्ञान बिन, मिसाले दीपक की पतंग होकर।१०
कविता गिरी कहै कविताई को, ढंग से मत कर कुढंग होकर ॥

शब्द १२५

सिया राम कहने का मज़ा जिस की ज़बां पर आगया।
जीवन वह मुक्ति हो गया चारों पदार्थ पागया ॥
लूटे मज़े ध्रुव भक्त ने उस नाम के प्रताप से।

सन्मुख प्रभु के जा बसे त्रिलोक में जस छा गया ॥
प्रह्लाद के लागी लगन उस पारब्रह्म के नाम की।
नर सिंह हो दर्शन दिया अपने हृदय से लगा गया ॥
शिवरी जो कहिये भिलनी जिन प्रेम से सुमरण किया।
परमात्मा घर आय उसके हाथ के फल खागया ॥
कलिकाल के जो भक्त हैं उन का तो रुतबा है बड़ा।
नरसी की हुंड़ी द्वारका से सांवरा दिलवा गया ॥
योगी मुनिश्वर देवता उस रूप को खोजत फिरें।

जिस पै हुई उस की दया सत्गुरु उसे दरशा गया ॥
द्वारही कीरत विमल रुत राजसी संसार में।

नरसी की हुंडी द्वारका से सांवरा दिलवा गया ॥
योगी मुनिश्वर देवता उस रूप को खोजत फिरें ।

जिस पै हुई उस की दया सतगुरु उसे दरशा गया ॥
छारही कीरत विमल रुत राजसी संसार में ।
वो भक्त जन के काज तुलसी राम रंग बरसा गया ॥

शब्द १३६

प्रेम हो तो श्री हरि का प्रेम होना चाहिये ॥
जो बने विषयों के प्रेमी उन पै रोना चाहिये ॥ टेक ॥
दिन गंवाये ऐश और आराम में तुमने अगर ।
रात को सुमरण हरि का करके सोना चाहिये ॥ १ ॥

बीज बोकर बाग़ के फल खाये हैं तुमने अगर।
वास्ते परलोक के भी कुछ तो बोना चाहिये॥ २॥
मख़मली गद्दों पै सोये तुम यहां आराम से।
सफ़र लम्बे के लिये भी कुछ बिछौना चाहिये॥ ३॥
छोड़ ग़फलत तुमने यहां पाये हैं ये गितनी के सांस।
भोग में विषयों में फंस इन को न खोना चाहिये॥ ४॥
हैंगे हृदय ही में हरि पर भक्ति बिन मिलते नहीं।
दूध से मक्खन जो चाहो तो बिलोना चाहिये॥५॥

शब्द १३७

ऐसे तुम दीना नाथ काहे को बिसारे हैं।

दूध से मक्खन जो चाहो तो बिलोना चाहिये ॥५ ॥

शब्द १३७

ऐसे तुम दीना नाथ काहे को बिसारे हैं।
सिद्ध ला समाधि जाकी ज्योति को निहारे हैं॥ टेक॥
बेल पुष्प लता जाके भृग को पुकारें हैं।
सूर्य चन्द्र तारे जाकी महिमा प्रचारे हैं॥
सागर गम्भीर कहीं बहें नदी नाले हैं।
जाका विस्तार देख बुद्धि बल हारे हैं॥
अग्नि सम जल कहीं ज्वाला गिरि भारे हैं।

शीतल जलाशय जाके निकट बन हारे हैं ॥
प्रकाएड शिव जाके बल शक्ति के अधारे हैं।
लोक परलोक में जो बन्धु हमारे हैं ॥
सुखदेव जनक ईसा मत्त हुए भारे हैं।
गाय गाय जिन्हें नारद मुनि हारे हैं ॥

भजन १३८

ऐसे तुम दीना नाथ पापी परित्राता हो।
दीन दुःखिया पापी दुर्बल सब के मुक्ति दाता हो ॥

एक मात्र तुम ही स्वामी शक्ति और सहारा हो।
सब के जीवन आश्रय स्वामी धर्म के विधाता हो ॥

ऐसे तुम दीना नाथ पापी पारत्राता हो।
दीन दुःखिया पापी दुर्बल सब के मुक्ति दाता हो॥

एक मात्र तुम ही स्वामी शक्ति और सहारा हो।
सब के जीवन आश्रय स्वामी धर्म के विधाता हो॥
सब के पालन हार प्रभु बुद्धि ज्ञान आशा हो।
बन्धु साखा गुरु तुम ही, तुमही पिता माता हो॥
अमृत आधार हरि मृत्यु संजीवन हो।
नव जीवन आनन्द और पवित्र जीवन दाता हो॥

शब्द १३६

मेरे मन राम नाम दूसरा ना कोई॥टेक॥

प्रेम की मथनियां मांथी भक्ति से बिलोई।
दही मथ घृत काढ़ लियो छाछ पियो कोई॥
आंसू जल सींच सींच प्रेम बेल बोई।
सन्तन ढिंग बैठ बैठ लोक लाज खोई॥
मैं तो चली भक्त जान जगत मोहे देत तान।
आई प्रभु शरण तेरी होनी हो सो होई॥

ग़ज़ल १४०

कहां जाऊं किधर ढूंढ़ूं नहीं कोई ठिकाना है।

तेरे बिन अय प्रभु मैंने नहीं दूजे को जाना है॥
तुही खालिक तुही मालिक तुही अन्दर तुही बाहर।

कहां जाऊं किधर ढूंढूं नहीं कोई ठिकाना है ।

तेरे बिन अय प्रभु मैंने नहीं दूजे को जाना है ॥
तुही ख़ालिक तुही मालिक तुही अन्दर तुही बाहर ।
तुही है आश्रय सब का यही मैंने पिछाना है ॥
तेरे बिन है नहीं कोई जो हो हर हालत में संगी ।
तुझे हरि छोड़ना क्या है गोया दोज़ख़ को पाना है ॥
गुनाह का ज़ख्म है भारी इलाज इस का तुही तो है ।
हकीम हाज़िक तुही है इक तुही कामिल सियाना है ॥

शब्द १४१

मत मारो बेदरदी कारी गैया हूं ॥ टेक ॥
दूध पिलाय मैंने तुम को है पाला, अरे इस नाते से मैया हूं ॥१॥
दूध दही मैं तुम को देती, भुस की आप खवैया हूं ॥२॥
बैल मेरे हल-कूवों में चालें, अरे मैं भारत बोझ खिवैया हूं ॥३॥
गरुड़ पुराण में लिखा हुवा है, वैतरणी की नैया हूं ॥४॥

शब्द

फैलादो ब्रह्मज्ञान जगत में ॥ टेक ॥
सत्य धर्म और वेद पठन में अर्पण करदो प्राण ।

सत्य ही बोलो झूठ को छोड़ो तज दो हठ अभिमान ॥
नित्य प्रति पांचो यज्ञ रचावो दो दीनों को दान ।

सत्य धर्म और वेद पठन में अर्पण करदो प्राण ।

सत्य ही बोलो झूठ को छोड़ो तज दो हठ अभिमान ।।
नित्य प्रति पांचो यज्ञ रचावो दो दीनों को दान ।
देश देश उपदेश सुनाओ गरजो सिंह समान ।।
चीन अरब काबुल क्या लंका क्या यौरप जापान ।
सन्तानों को वेद पढ़ाओ छोड़ो मोह अभिमान ।।

शब्द १४३

चरखते वाली तेरा चरखा बोले राम नाम भज तुही ।। टेक ।।
चरखा तेरा रंग रंगीला पीढ़ा लाल गुलाल ।

कातन वाले श्याम सुन्दरी मुड़ तुड़ घाले तार ॥ १ ॥
बन जाई बन ऊपजी बणी हु हमरो बास ।
एक अचम्भा मैं सुना बेटी ने जायो बाप ॥ २ ॥
बेटी बोली बाप से अनजाया बर ला ।
अनजाया बर ना मिले हमरा तुमरा व्याह ॥ ३ ॥
ज्येठाणी मांढा रचा द्यौराणी के व्याह ।
नणदेइया चैरी चढ़ा देवरिया फेरे खाय ॥ ४ ॥
रुई पिनावन मैं गई सुन पिनहारे बात ।

रोम रोम मेरा पीन दे मेरे सतगुरु का परताप ॥ ५ ॥
चरखा चरखा सब कहैं चरखा लखा न जाय ।
चरखा लखियां दास कबीरा आवागमन मिट जाय ॥३॥

नणदेइया चरी चढ़ी दवरिया ...
रुई पिनाबन मैं गई सुन पिनहारे बात ।

रोम रोम मेरा पीन दे मेरे सतगुरु का परताप ॥ ५ ॥
चरखा चरखा सब कहैं चरखा लखा न जाय ।
चरखा लखियां दास कबीरा आवागमन मिट जाय ॥३॥

शब्द १४४

मेरा राम मिला मेरा पीव मिल्या,
सन्तो तन मन खोजी राम मिला ॥ टेक ॥
जब लग मैं तब लग हरि नाहीं, मैं जब मिटी हरि आप हुवा ।
सुपना में सखी दोजण सूत्या, खुल्या नयन तब एक हुबा ॥१॥

जन जन से प्रीत करी थी साहब, मुख से न्हा बोल्या।
जन से छोड़ करी सत्गुरु से, साहब परदा जब खोल्या ॥२॥
अचरज एक सुणों साधो, बूदयां में समध समाय रहा।
अठसठ तीरथ घट ही में गंगा, हरदम मनुवां न्हाय रहा ॥३॥
बिना बीज का विरछा देखा, चौदह तबक में छाय रहा।
धरण गगन जन दोनों छांड़ी, सब से आगे जाय रहा ॥४॥
रहम नाथ धरचा दस्तक, मस्तक मोह भरम सब कपट गया।
नाथ गुलाब मिटचा दुःख तेरा, अमरापर में बास हुवा ॥५॥

शब्द १४५

कुटुम्ब त्यज शरण राम तेरी आयो।
तज घर लंक महल और मन्दिर नाम सुनत उठ धायो ॥टेक॥

रहम नाथ धरया दस्तक, मस्तक मोह भरम सब कपट गया।
नाथ गुलाब मिट्या दुःख तेरा, अमरापर में वास हुवा ॥५॥

शब्द १४५

कुटुम्ब त्यज शरण राम तेरी आयो।
तज घर लंक महल और मन्दिर नाम सुनत उठ धायो ॥टेक॥
भरी सभा में रावण बैठ्यो चरण प्रहार चलायो।
मूर्ख अन्ध कह्यो नहीं माने बार बार समझायो ॥१॥
आवत लंका पति कीनों हरि हंस कण्ठ लगायो।
जन्म जन्म के मिटे पराभव राम दर्श जब पायो ॥२॥
हे रघुनाथ अनाथ के बन्धु दीन जान अपनायो।

तुलसीदास रघुबर की शरण भक्ति अभय पद पायो ॥३॥

शब्द १४६

नहीं छोड़ूं रे बाबा रामनाम, मेरो और पढ़न सों नहीं काम॥टेक॥
प्रहलाद पठाये पढ़न शाल, संग सखा बहु लिये ग्वाल बाल।
मोको कहा पढ़ावत आलजाल, मेरी पटिया पै लिख देऊ श्रीगोपाल॥१॥
यह पंडा मर्कें कह्यो जाय, प्रहलाद बुलायो बेग धाय।
तू राम कहन की छोड़ बान, तुझे तुरत छुड़ाऊं कह्यो मान॥२॥
मोको कहा सतावो बार बार, प्रभु जल-थल नभ कीन्हे पहार।
एक राम न छोड़ूं गुरहि गार, मोहे घाल जार चाहे मार डार॥३॥
काढ खड्ग कोप्यो रिसाय, तुझे राखन हारो मोहि बताय।
प्रभ खम्ब से निकसे हो विस्तार, हिरणाकुश छेद्यो नख विदार॥४॥

तू राम कहन की छोड़ बान, तुझे तुरत छुड़ाऊं कह्या मान ॥२॥
मोको कहा सतावो बार बार, प्रभु जल-थल नभ कीन्हे पहार ।

एक राम न छोडूं गुरहि गार, मोहे घाल जार चाहे मार डार ॥३॥
काढ़ खड्ग कोप्यो रिसाय, तुझे राखन हारो मोहि बताय ।
प्रभू खम्ब से निकसे हो विस्तार, हिरणाकुश छेद्यो नख विदार ॥४॥
श्री परम पुरुष देवाधि देव, भक्त हेत नरसिंह भेव ।
कहे कबीर कोऊ लखे न पार, प्रहलाद उबारे अनेक बार ॥५॥

शब्द १४७

झीनि झीनि झीनि चदरिया ॥ टेक ॥
आठ कमल दस चरखा डोले, पांच तत्त गुण तीनि चदरिया ॥१॥

साईं को सीमत मांस दस लागे, ठोक ठोक कर बुनी चदरिया ॥२॥
सो चादर सुर नर मुनि ओढ़ी, ओढ के मैली कीनी चदरिया ॥३॥
दास कबीर जतन से ओढ़ी, ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया ॥४॥

शब्द १४८

दर्शन देना प्राण पियारे, नन्दलाल मेरे नैनों के तारे ॥टेक॥
दीनानाथ दयाल सकल गुण, नवल किशोर सुन्दर मुख वारे॥१॥
मन मोहन मन रुकत न रोक्यो, दर्शन की चित चाह हमारे ॥२॥
रसिक खुशाल मिलन की आशा, निशि दिन सुमरन ध्यान लगा रे ३

शब्द १४९

संकट काट मुरारी हमरे संकट काट मुरारी ।

मन मोहन मन रुकत न रोक्यो, दर्शन को ...
रसिक खुशाल मिलन की आशा, निशि दिन सुमरन ध्यान लगा

शब्द १४६

संकट काट मुरारी हमरे संकट काट मुरारी ।
संकट में इक संकट उपज्यो अरज करै मृगनारी ।।टेक।।
इक ढिंग बावर जाय गडरिया, इक ढिंग श्वान विहारी।
इक ढिंग जाय अंग साडी, इक ढिंग जा बैठ्यो फन्दकारी ।।१।।
उलट पवन बागर को लागी, श्वान भयो संसकारी ।
बांबी से भुजंग जो निकस्यो, ताहि डस्यो फन्दकारी ।।२।।
नाचत कूदत हिरनी निकसी, भलो कियो गिरधारी ।

सूरदास प्रभु तुमरे दर्श को, चरण कमल बलिहारी ॥३॥

शब्द १५०

हम भक्तन के भक्त हमारे ॥ टेक ॥

सुन अर्जुन प्रतिज्ञा मेरी, यह व्रत होत टरत नहिं टारे ॥१॥
भक्तन काज लाज अपनी को, पांव पियादे धाऊंरे ॥२॥
जहां जहां भीड़ पड़ी सन्तन को, तहां तहां को उठ धाऊं रे ॥३॥
जो मम भक्तन बैर करत है, सो जन बैरी मेरो रे ॥४॥
सूरदास जो भक्त द्रोही, चक्र सुदर्शन मारूं रे ॥५॥

शब्द १५१

मन तू क्यों घबरावे रे, शिर पर श्रीगोपाल बेड़ा पार लगावे रे ॥टेर॥

सूरदास जी भक्त द्रोही,

शब्द १५१

मन तू क्यों घबरावे रे, शिर पर श्रीगोपाल बेड़ा पार लगावे रे॥टेर॥
निज करनी को याद करूं तब मेरा दिल घबरावे रे।
सुन सुन थारी महिमा मेरे धीरज आवे रे॥ १॥
जो अपने अपराध कहूं तो अन्त न आवे रे।
ऐसे हैं भगवान दिल पर एक न लावें रे॥ २॥
शरण आये की लाज हो सब ही ने आवे रे।
ऐसे हैं भगवान लज्जा नहीं गंवावें रे॥ ३॥

सुर नर मुनि जन ध्यान लगावें जाका पार न पावें रे।
ऐसे हैं भगवान् भक्त की ओर निहारें रे ॥ ४ ॥

शब्द १५२

म्हाने पार उतारो जी थाने थारे निज भक्तारी आन टेक॥
हमारो अवगुन नेक न चितवो, अपनो ही कर जान ॥१॥
काम क्रोध मद लोभ मोह वश, भूलो पद निर्वान।
अबतो शरण गही चरणन की, मत दीजो मोहे जान ॥२॥
लख चौरासी भटकत भटकत, मोरी पड़ी पिछान।

भवसागर में बह्यो जात हूं, रखिये श्याम सुजान ॥३॥
हूं तो कुटिल अधम अपराधी

भवसागर में बह्यो जात हूं, रखिये श्याम सुजान ॥३॥
हूं तो कुटिल अधम अपराधी, ना सुमरयो तेरो नाम।
नरसी के प्रभु अधम उधारन, गावत वेद पुरान ॥ ४ ॥

शब्द १५३

दुनियां से नेह लगाय के मत भूलै नाम हरि का ॥ टेक ॥
गुरु चेला अरु साह करोड़ी, बिछड़त देखी सबकी जोड़ी, कालबली ने गरदन तोड़ी। इस दुनियांमें आय के, बस चलान मरद बली का ॥१॥ गर्भत्रास में अति दुःख पाया, बचन किया अरु शीश नवाया,

मूरख तैं तो वृथा गंमाया । त्रिया से नेह लगाय के, सुख भोग्या सेज परी का ॥२॥ जोग जुगत सब करते देखे, श्वास कपाली धरते देखे, अन्त समय सब मरते देखे, तजैं प्राण मुख बाय के । जैसे पड़ा श्वान नगरी का ॥ ३॥ सात पहर घर धन्धा करले, एक पहर हरसे चित धरले, भव सागर से पार उतरले, ब्रह्मचारी कहै गाय के । कछु बणै न खोड मरी का ॥ ४ ॥

शब्द १५४

नारायरन जिनके परि पालक तिनके कौन दुखाय सकै रे ॥टेक॥

प्रहलाद भक्त को डारा अग्न में, रोम न एक जलाय सके रे ॥१॥ गज को पकड़ ग्राहने खींचा, नहीं जल बीज डुबाय सके रे ॥२॥

नारायरन जिनके पार पालक

प्रहलाद भक्त को डारा अग्न में, रोम न एक जलाय सके रे ॥१॥
गज को पकड़ ग्राहने खींचा, नहीं जल बीज डुबाय सके रे ॥२॥
द्रुपद सुता की बीच सभा में, स्वं न लाज उठाय सके रे ॥३॥
ब्रह्मानन्द जो हरि गुण गावे, सो निर्भय पद पाय सके रे ॥४॥

शब्द १५५

मनुवा नहिं विचारीरे, तेरी मेरी कहता उमर खोदई सारी रे ॥टेक॥
गर्भ बास में रक्षा कीनी, सदा विहारी रे ।
बाहर काढो नाथ भक्ति, करस्युं थारी रे ॥ १ ॥

बाल पने में लाड़ लडायो, माता थारी रे।
पीछे तू माया संग लिपट्यो जोड़ी यारी रे ॥ २ ॥
सतगुरु बात ज्ञान की कीनी लागी खारी रे।
जै कोई कहता भजन करो, जद दीनी गारी रे ॥ ३ ॥
पीछे तो मन सोच करयो, कुछ बनी न म्हारी रे।
पार लगाओ नाथ धानों, शरण तिहारी रे ॥ ४ ॥

शब्द १५६

बोलै छै वाकी खबर नहीं कांई आवे कांई जाय ॥ टेक ॥

थानी को नर बन्यो बुलबुलो, धरयो आदमी नाम।
कौल किया था भजनकरण का, आय बसायो तैं तो गाम॥१॥

बोलै छै वाकी खबर नहीं कांई आवे कांई जाय ॥ टेक ॥

पानी को नर बन्यो बुलबुलो, धरयो आदमी नाम ।
कौल किया था भजनकरण का, आय बसायो तैं तो गाम॥१॥
हाथी छूटा थान से रे, लसकर पड़ी पुकार ।
दश दरवाजा बन्ध करा रे, निकल गया असवार ॥ २ ॥
जैसे पाणी ओस का रे, तैसो यो संसार ।
झिलमिल झिलमिल हो रही रे, जात न लावे बार ॥३॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, झूठो जगत व्यवहार ।
राम नाम की नाव बनाले, उतर जायगा पार ॥ ४ ॥

शब्द १५७

प्रभू कुदरत खेल रचाया ॥ टेक ॥

तू निराकार, तू निर्विकार, तू एक सार, यह सब असार,
कर नमस्कार सौ बारा । बाजत हैं बाजा सितार,
गुण गावें तेरा तार तार, हैं ध्यावें तुझको बार बार,
सब प्रेमी तुझको गाया ॥ १ ॥

कड़कडात जो गरमी पड़त है, बादल कहीं न नजर पड़त है,
आवो दाना पानी खाना, मिलता नहीं है शाम सुबह ।

आई घटा घन घोर जोर से, बादल बरसै ठौर ठौर से,
इक पल में समय बदलाया ॥ २ ॥

चिड़िया चिड़ चिड़, कोयल क क, पी पी पपीहा फाखता ह ह,

आवो दाना पानी खाना, मिलता नहीं है शाम सुबह ।

आई घटा घन घोर जोर से, बादल बरसै ठौर ठौर से,
इक पल में समय बदलाया ॥ २ ॥
चिड़िया चिड़ चिड़, कोयल कू कू, पी पी पपीहा फाखता हू हू,
करते हैं हरसू । हरयावल का फरश बिछा है शबनम के मोती से
जड़ा है, बन पर्बत फूलों से लदा है, और फलों से लदाया ॥३॥

प्रार्थना १५८

दीनबन्धो हम सबों को ज्ञान भिक्षा दीजिये ।
आपके हम पुत्र हैं सब भान्ति रक्षा कीजिये ॥

दो हमें वर भक्ति अपनी और सुन्दर धीरता।
शक्ति विद्या मान धन यश आदि सच्ची वीरता॥
देशसेवी हम सभी हों सत्य ही भाषण करें।
झूठ छल चोरी जुवा से नित्य हे ईश्वर डरें॥
अन्त को सब शिशु गणों की आप से विनती यही।
हों सभी इस योग्य जो शोभित करें भारत मही॥
हे प्रभो आनन्ददाता ज्ञान हम को दीजिये।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हम से कीजिये॥

लीजिये हमको शरण में हम सदाचारी बनें।
ब्रह्मचारी धर्म रक्षक वीर व्रतधारी बनें॥
सृष्टिपालक दुष्टघातक भक्त सुखदायक बनें।

हे प्रभो आनन्ददाता ज्ञान हम को दीजिये।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हम से कीजिये॥

लीजिये हमको शरण में हम सदाचारी बनें।
ब्रह्मचारी धर्म रक्षक वीर व्रतधारी बनें॥
सृष्टिपालक दुष्टघातक भक्त सुखदायक तुम्हीं।
दीनबन्धु करुणसागर और सब लायक़ तुम्हीं॥
प्रह्लाद ध्रुव के सम हमें प्रभु अपनी भक्ती दीजिये।
देश हित तन धन बली करनें को तत्पर कीजिये॥

प्रार्थना १५६

ईश्वर तू है सबका स्वामी, क्षमा सिन्धु उर अन्तरयामी।

महिमा तेरी अपरम्पार, तुझ से गये वेद भी हार ॥
तूने सारा जगत बनाया अनुपम दृश्य हमें दिखलाया।
सूरज तारे चांद बनाये जलथल अनल पवन प्रगटाये ॥
न्यायी सत्य सिन्धु सुख खान करुणानिधि तू है बलवान।
दानी ज्ञानी घट घट वासी, तू है निर्विकार अविनाशी ॥
जीना मरना तेरे हाथ अधःपतन उन्नति तव साथ।
यश अपयश का तू ही दाता, रूप न तेरा जाना जाता ॥
चींटी से हाथी तक सारे जितने जीव जन्तु बेचारे।

देकर सबको दाना पानी रखता तू उनपर निगरानी ॥
राई को पर्वत कर देता, पर्वत राई कर धर देता।

यश अपयश को तू ही दाता,
चींटी से हाथी तक सारे जितने जीव जन्तु बेचारे।

देकर सबको दाना पानी रखता तू उनपर निगरानी ॥
राई को पर्वत कर देता, पर्वत राई कर धर देता।
नगरों को तू निर्जन करता, वन में नगरी सिरजन करता ॥
ब्रह्मादिक तव ध्यान लगाते, नारदादि मुनिवर गुणगाते।
गाते गाते वे थक जाते, तो भी पार न तेरा पाते ॥
हे ईश्वर हे जगदाधार महिमा तेरी अपरम्पार।
हमारी रख लीजे प्रभू लाज, विनय यही हैं करते आज ॥
हे प्रभु रक्षा करो हमारी हम आये हैं शरण तुम्हारी।

दिन भर के अपराध हमारे क्षमा करो करुणानिधि सारे ॥

विनय १६०

इस देश को हे दीनबन्धो आप फिर अपनाइये।
भगवान भारत वर्ष को फिर पुण्य भूमि बनाइए ॥
जड़ तुल्य जीवन आज इसका विघ्न बाधा पूर्ण है।
हे रम्ब अब अवलम्ब देकर विघ्न हर कहलाइए।
हम मूक किंवा मूढ हों रहते हुवे तुझ शक्ति के।
मां ब्राह्मी कहदे ब्रह्म से सुख शान्ती फिर सरसाइये ॥

सर्वत्र बाहर और भीतर रिक्त भारत हो चुका।
फिर भाग्य इसका हे विधाता पर्व सा पलटाइये ॥

मां ब्राह्मी कहदे ब्रह्म से सुख शान्ति फिर सरसाइये ॥

सर्वत्र बाहर और भीतर रिक्त भारत हो चुका।
फिर भाग्य इसका हे विधाता पूर्व सा पलटाइये ॥
तू अन्न पूर्णा मां रमा है और हम भूखों मरे।
कहदे जनार्दन से जगाकर दैन्य दुःख मिटाइये ॥
यह सृष्टि गौरव गज ग्रसित है ग्रह दशा के ग्राह से।
हे भक्तवत्सल शुभ सुदर्शन चक्र आप चलाइये ॥
मां शंकरी सन्तान तेरी हाय यों निरुपाय हो।
श्री कण्ठ से कहदे कि हे हर अब न और सताइये ॥

शून्य शमशान समान भारत हाय कबसे हो चुका।
आकर कराल विपत्ति विष से व्योम केश बचाइये॥
सम्पूर्ण गुण गौरव रहित हम पतित अवनत हो चुके।
अब छोड़ निर्गुणता विभो सत्वर सगुन बन जाइये॥
सीतापते सीतापते यह पाप भार निहारिये।
अवतीर्ण होकर धर्म का निज राज्य फिर फैलाइये॥
गोपाल अब वह चैन की वंशी बजेगी कब यहां।
आलस्य से अभिभूत हमको कर्म योग सिखाइये॥

जिस वसुमती पर आपने बहु ललित लीलायें रचीं।

जिस वसुमती पर आपने बहु ललित लीलायें रचीं।
करुणा निधे इस काल उसको आप यों न भुलाइये॥
पशु तुल्य परवशता मिटे प्रकटे यथार्थ मनुष्यता।
इस कूप पण्डूकत्व से परमेश पिण्ड छुडाइये॥
जीवन गहन वश हुआ है भटकते हैं हम यहां।
प्रभु वर सदय हो कर हमें सन्मार्ग पर पहुंचाइये॥
वह पूर्व की सम्पन्नता यह वर्त्तमान विपन्नता।
अबतो प्रसन्न भविष्य की आशा यहां उपजाइये॥

वरमन्त्र जिसका मुक्ति था परतंत्र पीड़ित हैं वही।
फिर वह परम पुरुषार्थ इसमें शीघ्र ही प्रकटाइये॥
यह पाप पूर्ण परावलम्बन चूर्ण होकर दूर हो।
फिर स्वावलम्बन का हमें प्रिय पुण्य पाठ पढाइये॥
व्याकुल नहो कुछ भय नहीं तुम सब अमृत सन्तान हो।
यह वेद की वाणी हमें फिर एक वार सुनाइये॥
यह आर्य भूमि सचेत हो फिर कार्य भूमि बने अहा।
यह प्रीति नीति बढे परस्पर भीति भाव भगाइये॥

किसके शरण होकर रहें अब तुम विना गति कौन है।

किसके शरण होकर रहें अब तुम विना गति कौन है।
हे देव वह अपनी दया फिर एक बार दिखाइये॥

प्रार्थना १६१

हे नाथ हे प्रभु महा महिमा तुम्हारी,
वाणी नहीं कह सुना सकती हमारी।
सौ वर्ष भी यदि सदा तव कीर्त्ति गावें,
तो भी कभी न उसके वह पार जावें॥ १॥

पृथिवी पहाड़ नद पेड़ समुद्र सारे,
हैं यह समस्त जगदीश दिये तुम्हारे।
हे ईश आप यदि सूर्य हमें न देते,
तो जीव जन्तु जग में न कदापि जीते। २॥
यह जो अनेक फल हैं जग में दिखाते,
खाते नहीं हम कभी जिनको अघाते।
यह पुष्प नेत्र सुखदायक जो खिले हैं,
सो भी सभी तव कृपा कण से मिले हैं॥ ३॥

देते न जो तुम हमें जगदीश आंखें,
पाते इन्हें न करते यदि यत्न लाखें।

देते न जो तुम हमें जगदीश आंखें,
पाते इन्हें न करते यदि यत्न लाखें।
हे सर्व लोक सुख दायक सौख्य धाम,
हे विश्व नाथ विश्वेश तुम्हें प्रणाम ॥ ४ ॥
जो जो छिपाय हम काम बुरे करैं हैं,
जाने न और इस से मन में डरैं हैं।
सो सो सदा तुम उसी क्षण जान लेते,
तत्काल नाथ हमको तुम दण्ड देते ॥ ५ ॥

हे हे दयामय प्रभो कर जोड़ते हैं,
सारी कुचाल अब से हम छोड़ते हैं।
जो भूल चूक परमेश्वर हो हमारी,
कीजे क्षमा शरण में हम हैं तुम्हारी ॥ ६ ॥

प्रार्थना १६२

भक्ति अपने पद कमल की दीजीये प्रभु दीजीये।
चरण सेवक आप अपने कीजीये प्रभु कीजीये॥
अनगणित यह वस्तुयें प्रभु आपने की हैं प्रदान।

ज्ञान की शक्ति हमें प्रभु दीजीये हरि दीजीये॥
अनहित न होवे जन्म भर हमसे किसी का हे प्रभो।

ज्ञान की शक्ति हमें प्रभु दीजीये हरि दीजीये ॥
अनहित न होवे जन्म भर हमसे किसी का हे प्रभो।
बुद्धि ऐसी हमको हे प्रभु दीजीये हरि दीजीये ॥
हे स्वामी चरणों में तुम्हारे कोटि बार प्रणाम है।
दास हमको आप अपना कीजीये हरि कीजीये ॥१॥

प्रार्थना १६३

पितु मात सहायक स्वामी सखा, तुमही एक नाथ हमारे हो।
जिनके कुछ और अधार नहीं तिनके तुमही रखवारे हो ॥

प्रतिपाल करो सगरे जगके अतिशय करुणा उर धारे हो ।
भूलि हैं हमही तुमको तुमतो हमरी सुधि नांहि बिसारे हो ॥
उपकारन को कुछ अन्त नहीं छिन ही छिन जो विस्तारे हो ॥
महाराज महा महिमा तुमरी समझे विरले बुध वारे हो ॥
शुभ शान्ति निकेतन प्रेम निधे मन मन्दिर के उजयारे हो ।
यह जीवन के तुम जीवन हो इन प्राणन के प्यारे हो ॥

कवित १६४

दीन मलीन अधीन है अंग, विहंग परयो क्षित खिन्न दुखारी ।

राघव दीन दयालु कृपालु को , देख दुखी करुणा भई भारी ॥

राघव दीन दयालु कृपालु को , देख दुखी करुणा भई भारी ॥
गीध की गोद में राखि कृपानिधि, नैन सरोजन में भरिबारी ।
बार ही बार सुधारत पंख, जटायु की धुरि जटान सूं भारी ॥ १
ऐसे बिहाल बिवायन सों भये, कण्टक जाल लगे पुनि जोये ।
हाय महा दुख पायो सखा, तुम आये इतै न कितै दिन खोये॥
देखि सुदामा की दीन दशा, करुणा करिके करुणा निधी रोये
पानी परात को हाथ छुयो नहीं, नयनन के जल सों पग धोये॥२
मानस हों तो वही रस खान बसों, ब्रज गोकुल गांव ग्वारन॥

जो पशु हों तो कहां बस मेरो चरों नित नन्दकी धेनु मझारन॥
पावन हो तो वही गिरि कें धरयो, कर छत्र पुरन्दर धारन।
जो खगहों तो बसेरो करों मिल, कालिन्दी कूल कदम्बकी डारन॥३
शेष महेश गणेश दिनेश सुरेशहु, जाहे निरन्तर ध्यावें।
जाहै अखण्ड अनादि अनन्त अछेद्य, अभेद्य सुभेद्य बतावें॥
नारद से शुक व्यास रटैं, पचि हारे तेहू पुनि पार न पावें।
ताहे को अहीर की छोकरियां, छछिया भर छाछपै नाच नचावें॥४

———

गयादत्त प्रेस दिल्ली में छपा।